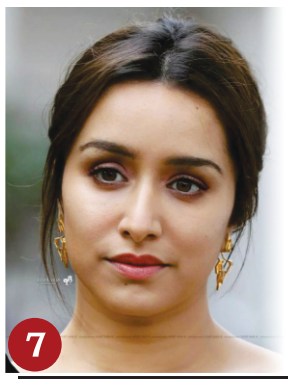

7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 गोरखपुर शहर में मिले देहात परमिट के आटो
5 प्रेम यादव के घर से कुछ ही दूरी पर खड़ा है बुलडोजर
8 भदोही के लाल ने एशियन गेम्स के पहले ही मैच में शतक जड़ रचा इतिहास

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 11 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 09 अक्टूबर, 2023

देवरिया-नरसंहार का दर्द

जमीन के टुकड़े बन जाते हैं खूनी रंजिश की वजह

देवरिया। उत्तर प्रदेश का देवरिया जिला इन दिनों चर्चा में है। चंद मिनटों में हुई छह हत्याओं ने सभी को हिला कर रख दिया। इस नरसंहार की वजह है भूमि विवाद। जिले में इन दिनों भूमि के विवाद सर्वाधिक बढ़े हैं। भूमि के चंद टुकड़ों के लिए आए दिन खून की होली खेली जा रही है। छोटे-छोटे मामलों में लोगों की हत्याएं हो रही हैं।

हर जगहों पर राजस्व व पुलिस की लापरवाही सामने आ रही है। बावजूद इसके कर्मचारियों व अधिकारियों में कोई बदलाव नजर नहीं आ रहा है। भूमि विवाद के पहले मामले थाने के अलावा तहसीलों तक जाते हैं, निस्तारण न होने के बाद उच्चाधिकारी व फिर न्यायालय की चौखट तक पहुंच जाते हैं। शुरूआती दौर में नीचले क्रम के कर्मचारी इसमें लापरवाही बरतते हैं और फिर मामला बिगड़ जाता है।

भूमि-विवाद के चलते हुआ खूनी संघर्ष

हाल के दिनों में कई ऐसी बड़ी घटनाएं हुई, जिसमें भूमि विवाद में लोगों की जान चली गई। ऐसे ही कुछ मामले है जिसने खूनी रंजिश को अंजाम दिया है।

केस संख्या एक

एक अक्टूबर को भूमि विवाद में शहर के पुरवा में दो पक्षों में विवाद हो गया। विवाद इतना बढ़ गया कि दो गाड़ियां फूंक दी गई और एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई। इस मामले में पांच लोग घायल हो गए।

केस संख्या दो

दो अक्टूबर को रुद्रपुर कोतवाली के फतेहपुर लेहड़ा में भूमि विवाद में छह लोगों की हत्याएं हुई। प्रशासनिक स्तर से जांच शुरू हुई तो परत-दर-परत राजस्व व पुलिस विभाग के कर्मचारियों व अधिकारियों की कलई खुलने लगी।

केस संख्या तीन

११ मई २०२२ को गौरीबाजार थाना क्षेत्र के देवतहां में सगे दो भाईयों की गला रेत कर भूमि विवाद में हत्या कर दी गई। इस मामले में पुलिस ने आरोपित को कुछ ही दिन बाद गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

पुलिस विभाग ने कही ये बात

भूमि विवाद में कई घटनाएं हुई। सभी घटनाओं का पुलिस पर्दाफाश कर रही है। अधिकांश मामलों में आरोपित गिरफ्तार कर जेल भेज जा चुके हैं। - डा.राजेश सोनकर एएसपी, देवरिया

देवरिया में छह लोगों की निर्मम हत्या के बाद सन्नाटा पसर गया है।
मामल की जांच के लिए सीएम योगी सख्त हो गए हैं।
जिले में भूमि विवाद को लेकर खूनी संघर्ष के मामले बढ़े हैं।

उत्तर प्रदेश का देवरिया जिले में इन दिनों सन्नाटा पसरा है। भूमि विवाद के चलते हुए छह हत्यारों ने प्रशासन से लेकर यहां के लोगों को हिला दिया है। किसी को अंदाजा नहीं था कि भूमि के चंद टुकड़ों के लिए यहां खून की होली खेली जाएगी। खैर पिछले कुछ समय से देवरिया में भूमि विवाद में संघर्ष के मामले बढ़ गए हैं।

जालंधर में आग से उजड़ा परिवार

क्या सात माह पहले खरीदा डबल डोर फ्रिज बना काल

चंडीगढ़। रविवार रात साढ़े नौ बजे हुए हादसे की जानकारी आसपास के लोगों को धुआं देखकर मिली। लोगों का कहना है कि उन्होंने न किसी धमाके की आवाज सुनी और न ही कंप्रेसर फटने की।

आग में भाजपा कार्यकर्ता, उनकी बहू और तीन पोत-पोतियों की जलकर मौत हो गई।

जालंधर वेस्ट के अवतार नगर के गली नंबर-१२ में आग में एक परिवार की खुशियां और सपने झुलस गए। भाजपा कार्यकर्ता के घर में घरेलू गैस सिलिंडर लीक होने से आग लग गई। आग में यशपाल सिंह घई, उनकी बहू रुचि, पोतियां दीया व मंशा और पोते अक्षय जिंदा जल गए।

यशपाल के बेटे इंद्रपाल सिंह ने गंभीर हालत में सोमवार सुबह दम तोड़ दिया। परिवार में अब एक बुजुर्ग ही बची हैं।

कंप्रेसर फटा या गैस लीक हुई

हादसा कैसे हुआ, अब इसकी जांच तेज हो गई है। मृतक के भाई राज घई का कहना है कि परिवार ने सात महीने पहले डबल डोर वाला एक फ्रिज खरीदा था। फ्रिज का कंप्रेशर फटने के कारण यह हादसा हुआ है। फायर ब्रिगेड के अधिकारी के अनुसार जब वह अंदर पहुंचे तो रसोई गैस की दुर्गंध आ रही थी। उन्होंने झुलसे हुए लोगों को बाहर निकालने के बाद आग को बुझाने से पहले सिलिंडरों को बाहर निकाला था।

वहीं एक पड़ोसी ने बताया कि उन्हें किसी तरह के सिलिंडर फटने या कंप्रेशर फटने की आवाज नहीं आई। जब वह खाना खाकर छत पर टहलने निकले तो धुआं निकलते देखा।

रात में बेडरूम में दूसरे युवक संग थी इनकम टैक्स इंस्पेक्टर बीवी

फिर खुला ऐसा भेद, सिपाही पति के उड़े होश

कानपुर। कानपुर में खुद को इनकम टैक्स इंस्पेक्टर बता पहसे से शादीशुदा और दो बच्चों की मां ने सिपाही से शादी कर ली। उसने सिपाही से १० लाख हड़प लिए। दहेज में स्कार्पियो देने के लिए सिपाही से ही पैसे ले लिए। इसके बाद स्कार्पियो शादी में किराए पर मंगवाकर समारोह में खड़ी करवा दी। उसके परिजन भी फर्जी निकले। पुलिस को बड़े गिरोह की आशंका है। कानपुर शहर में एक लुटेरी दुल्हन का कारनामा सामने आया है। वह पहले से शादीशुदा और दो बच्चों की मां निकली। खुद को इनकम टैक्स इंस्पेक्टर बताकर फजलगंज थाने के सिपाही से शादी कर ली। फिर १० लाख रुपये हड़प लिए।

पत्नी को प्रेमी के साथ पकड़ने पर जब सिपाही ने खोजबीन शुरू की तो हकीकत सामने आई। नजीराबाद पुलिस ने एफआईआर दर्जकर महिला को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस को आशंका है कि वह एक बड़े गैंग से जुड़ी हुई है। झांसी के पूंछ निवासी सिपाही जितेंद्र गौतम फजलगंज थाने में तैनात हैं। २०१६ में उनकी दोस्ती झांसी के ही खुशीपुरा की शिवांगी सिसौदिया से फेसबुक पर हुई। २०१७ में शिवांगी शहर आई। श्यामनगर के एक होटल में शिवांगी जितेंद्र से मिली और खुद को इनकम टैक्स इंस्पेक्टर बताया। दोनों के बीच मेलजोल बढ़ा और १० फरवरी २०२१ को झांसी में दोनों ने शादी कर ली। सिपाही जितेंद्र ने बताया कि शिवांगी ने अपनी तैनाती चंडीगढ़ में बताई थी। शादी में दहेज में स्कार्पियो कार देने के लिए उसी से ६.२१ लाख रुपये लिए थे। बाद में चेक कैश होने पर वापस करने को कहा था।

सगाई में जब कार नहीं आई तो लंबी वेटिंग का बहाना बना दिया। शादी में चंदन नाम के शख्स से कार किराये पर लेकर खड़ी करवा दी। दूसरे दिन चालक कार लेकर चला गया। इसके बाद बतौर पत्नी शिवांगी ने करीब चार लाख रुपये और ले लिए।

बेडरूम में दूसरे युवक के साथ मिली शिवांगी

शादी के बाद जितेंद्र शिवांगी को लेकर नजीराबाद थाना क्षेत्र के रंजीतनगर स्थित एक फ्लैट में रहने लगा। जितेंद्र के अनुसार दो महीने पहले वह ड्यूटी से रात को घर पहुंचा तो बेडरूम में शिवांगी के साथ एक युवक को पाया। पूछने पर शिवांगी ने उसे रिश्तेदारी का भाई बताया।शक हुआ तो उसने छानबीन शुरू की। पता चला कि शिवांगी के साथ घर में मिला युवक झांसी के मऊरानीपुर के रहने वाला उसका प्रेमी सोनू था। यह भी पता चला कि शिवांगी की झांसी के रहने वाले बृजेंद्र से पहले ही शादी हो चुकी थी और उसके दो बच्चे भी हैं, जो उसी के साथ झांसी में रहते हैं।

सम्पादकीय

पुरानी पेंशन योजना लागू करे केन्द्र

पुरानी पेंशन योजना को लागू करने की मांग को लेकर रविवार को दिल्ली के रामलीला मैदान में शासकीय कर्मचारियों का विशाल प्रदर्शन आयोजित किया गया था जिसमें २० राज्यों के लाखों कर्मचारी शामिल हुए पुरानी पेंशन योजना को लागू करने की मांग को लेकर रविवार को दिल्ली के रामलीला मैदान में शासकीय कर्मचारियों का विशाल प्रदर्शन आयोजित किया गया था जिसमें २० राज्यों के लाखों कर्मचारी शामिल हुए। इसका आयोजन नेशनल मूवमेंट फार ओल्ड पेंशन स्कीम (एनएमओपीएस) के तत्वावधान में किया गया था। पेंशन शंखनाद महारैली के नाम से आयोजित इस रैली का उद्देश्य मौजूदा राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस) के बजाय पुरानी पेंशन योजना को लागू करने के लिए केंद्र पर दबाव बनाना था। इतनी विशाल संख्या में हुए प्रदर्शन से साफ है कि कर्मचारियों का रुझान पुरानी पेंशन योजना की ओर है और उसे नयी पेंशन योजना बिलकुल रास नहीं आ रही है। इसे देखते हुए केन्द्र सरकार पुरानी योजना को फिर से लागू करना चाहिये क्योंकि वही कर्मचारियों के पसंद की है और उनके हित में भी।

वैसे तो इस मसले को राजनैतिक ष्टिकोण से नहीं देखना चाहिये लेकिन यह सच है कि नयी योजना को भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र सरकार व उसके शासित ज्यादातर राज्यों की सरकारों का समर्थन है। दूसरी तरफ जहां गैर भाजपायी सरकारें हैं और उन राज्यों के कर्मचारी हैं, वे पुरानी स्कीम चाहते हैं। राजस्थान, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, झारखंड और पंजाब में तो इसे लागू करने का फैसला भी लिया जा चुका है। रविवार को एकत्र हुआ कर्मचारियों का हुजूम बतलाता है कि यह मुद्दा न केवल इस साल होने जा रहे पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों पर बल्कि २०२४ में निर्धारित लोकसभा चुनावों पर भी असर करेगा। उल्लेखनीय है कि २००४ में यूपीए की सरकार ने पुरानी योजना की जगह पर नई पेंशन योजना (एनपीएस) लागू की थी जो शेयर बाजार और अन्य निवेशों पर आधारित है। शेयर बाजार की स्थिति के आधार पर रिटर्न का भुगतान होता है। पुरानी पेंशन स्कीम (ओपीएस) में सेवानिवृत्ति के समय अंतिम मूल वेतन (बेसिक सैलरी) के ५० फीसदी तक निश्चित पेंशन मिलती है।

एनपीएस में रिटायरमेंट के समय निश्चित पेंशन की कोई गारंटी नहीं होने से यह कर्मचारियों की पसंद नहीं रह गयी है। पुरानी पेंशन योजना में कर्मचारियों के वेतन से कोई कटौती नहीं होती थी जबकि एनपीएस में कर्मचारियों के वेतन से १० फीसदी की कटौती होती है। इतना ही नहीं, नई पेंशन स्कीम में ग्रेच्युटी प्राविडेंट फंड उपलब्ध नहीं है।

पुरानी पेंशन स्कीम में यह सुविधा कर्मचारियों को मिलती है। पुरानी पेंशन योजना के और भी कई फायदे हैं। ओपीएस में रिटायर होने के बाद कर्मचारियों को चिकित्सा भत्ता और मेडिकल बिलों की सुविधा भी दी जाती है और सेवानिवृत्त कर्मचारियों को २० लाख रुपये तक की ग्रेजुएटी की रकम भी मिलती है। इस योजना के तहत कर्मचारी को सेवानिवृत्ति के समय की तनख्वाह की आधी राशि के बराबर की पेंशन मिलती है जिसका निर्धारण तत्कालीन वेतनमान एवं महंगाई सूचकांक के अनुसार होता है। साथ ही, कर्मचारी की मौत होने पर यह राशि उसके परिजनों को दी जाती है। इस तरह देखें तो वर्तमान परिस्थितियों में यही पेंशन स्कीम कर्मचारियों के व्यापक हित में है। तत्कालीन सरकार ने जब इसे बन्द किया था तब का आर्थिक परि श्य काफी अलग था। देश की अर्थव्यवस्था बड़ी ऊंचाइयों पर थी। १९९१ में आई नयी अर्थप्रणाली ने कार्पोरेट जगत को गतिशील बना दिया था जिसमें शेयर बाजारों में किया गया निवेश शर्तिया तौर पर फायदेमंद साबित होता था। २००८ की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी ने निजी सेक्टर को काफी कमजोर किया था, बावजूद इसके कि भारत पर मंदी का बड़ा असर नहीं पड़ा था, लेकिन शेयरों में निवेश करना जोखिम पर आधारित अधिक हो चला था। २०१४ में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में बनी भारतीय जनता पार्टी की सरकार के अदूरदर्शितापूर्ण निर्णयों से भारत की अर्थव्यवस्था मुठ्ठी भर कारोबारियों के लिये ही फायदेमंद रह गई है। पहले उद्योग-धंधों का स्वरूप विकेन्द्रित था। अब कुछ ही लोगों के शेयर उछाल मारते दिखते हैं जबकि ज्यादातर कम्पनियों के शेयरों में निवेश करना फायदे की गारंटी नहीं रह गई है। पुरानी पेंशन व्यवस्था की मांग करना एवं नयी योजना को नकारना दरअसल निवेश बाजार की गिरती साख का प्रतीक है। कर्मचारियों को पेंशन उनकी उम्र भर की कड़ी मेहनत से अर्जित की हुई होती है जिस पर उसकी सामाजिक सुरक्षा का पूरा भार होता है। इसी पेंशन के बल पर वे अपने बचे सपनों को पूरा करते हैं। बची आयु की रोजी-रोटी का जुगाड़ उसकी पेंशन से ही होता है और उसकी मृत्यु के बाद उसकी विधवा एवं नाबालिग बच्चों का भरण-पोषण भी इसी के जरिये सम्भव है। इस मुद्दे को इस लिहाज से नहीं देखा जाना चाहिये कि इसे किसने लागू किया या बन्द किया। इसका सम्बन्ध लाखों शासकीय कर्मचारियों के जीवन से जुड़ा हुआ है।

कुछ अरसा पहले राजस्थान में पुरानी पेंशन की बहाली का ऐलान सर्वप्रथम हुआ जिसका वहां के कर्मचारियों ने दिल से स्वागत किया है। हिमाचल प्रदेश के कर्मचारी भी इससे खुश हैं। छत्तीसगढ़ में भी यही स्थिति है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पुरानी स्कीम का समर्थन करते हुए केन्द्र सरकार से निवेदन किया है कि दिल्ली के कर्मचारियों को पुरानी योजना के अनुसार पेंशन देने का ऐलान करे। कर्मचारियों की मांग जायज है अतः केन्द्र सरकार को चाहिये कि उनकी इच्छा के अनुरूप पुरानी पेंशन योजना बहाल करे। देखना होगा कि सामान्य रूप से जायज मांगों को पूरा करने में अपनी हेठी समझने वाली मोदी सरकार इस बार कर्मचारियों की बात मानती है या नहीं। उन्हें इस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करना चाहिये। इससे राजकोष पर भार तो बढ़ेगा लेकिन कर्मचारियों के व्यापक हित में उसे इस पहलू पर ध्यान नहीं देना चाहिये।

स्वामीनाथन ने भारत को खाद्यान्न मांगने वाले देश से निर्यातक देश में बदल दिया

हरित क्रांति के वास्तुकार मनकोम्बु संबाशिवम स्वामीनाथन के लिए हरा जीवन का रंग था जिसने भारत की छवि को भीख मांगने के कटोरे से अन्न भरी टोकरी में बदल दिया

कृषि उत्पादन में लंबी छलांग वास्तव में समय की मांग थी। विदेशों से भोजन की सहायता से जुड़े तार दृष्टि में थे,लेकिन जल्द ही यह प्रक्रिया भोजन के साथ बेड़ियों में बदलने की धमकी दे रही थी। लेकिन समय के साथ, वह आदमी आया। स्वामीनाथन के काम ने भारतीय ेंषि में क्रांति ला दी, जिससे देश को अकाल से निपटने और खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करने में मदद मिली ।हरित क्रांति के वास्तुकार मनकोम्बु संबाशिवम स्वामीनाथन के लिए हरा जीवन का रंग था, जिसने भारत की छवि को भीख मांगने के कटोरे से अन्न भरी टोकरी में बदल दिया। एम एस स्वामीनाथन के मन में जीवन पर्यन्त आखिरी सांस तक यह धारणा बनी रही कि भूख गरीबी का सबसे खराब रूप है।

विचारों और विचारधारा के व्यक्ति, स्वामीनाथन ने चावल और गेहूं की उच्च उपज देने वाली किस्मों को विकसित करने के लिए साथी वैज्ञानिक न र्मनबोरल ग और अन्य के साथ सहयोग किया। इन उत्ेंष्ट ेंषि वैज्ञानिकों के कार्य के लिए इससे अधिक उपयुक्त समय पर फलीभूत होने वाला और क्या हो सकता था, क्योंकि तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने बड़े पैमाने पर उभर रहे खाद्य संकट से निपटने के लिए राष्ट्र से एक दिन का भोजन छोड़ने का आह्वान किया था।

देश को खाद्य संकट से उबारने के लिए शास्त्री के पास स्वामीनाथन से बेहतर कोई कप्तान नहीं हो सकता था। सामने आई चुनौती का जवाब देना केरल विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों के लिए कोई त्वरित प्रतिक्रिया नहीं थी।

१९४३ के मानव निर्मित बंगाल अकाल से बहुत स्वामीनाथन बहुत प्रभावित हुए, जिसके परिणामस्वरूप ३० लाख लोगों की मृत्यु हो गई थी। उस समय वह केरल विश्वविद्यालय के छात्र थे। उन्होंने गरीब किसानों को अधिक उत्पादन करने में मदद करने के लिए ेंषि अनुसंधान का उपयोग करने का मन बनाया था। अनजाने में, वह उस व्यक्ति के शब्दों को लागू करने का निर्णय ले रहे थे जिन्होंने देश के पहले प्रधानमंत्री के रूप में कहा था-शेंषि इंतजार नहीं कर सकती।

कृषि उत्पादन में लंबी छलांग वास्तव में समय की मांग थी। विदेशों से भोजन की सहायता से जुड़े तार दृष्टि में थे,लेकिन जल्द ही यह प्रक्रिया भोजन के साथ बेड़ियों में बदलने की धमकी दे रही थी। लेकिन समय के साथ, वह आदमी आया। स्वामीनाथन के काम ने भारतीय ेंषि में क्रांति ला दी, जिससे देश को अकाल से निपटने और खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करने में मदद मिली। हालांकि स्वामीनाथन का राजनीति से कोई लेना-देना नहीं था, लेकिन उन्हें जल्द ही यह एहसास हो गया कि भारत में ेंषि को अकाल और ग्रामीण आजीविका दोनों से लड़ने के लिए हथियार बनाया जाना चाहिए। उनके साथ काम करने वाले लोगों के साथ मिलकर उनके प्रयासों से चार फसल मौसमों में देश की फसल की पैदावार १२० लाख टन से लगभग दोगुनी होकर २३० लाख टन हो गई। उपरोक्त आंकड़ों का अक्सर उपहास किया जाता है। लेकिन तथ्य यह है कि इससे अनाज आयात पर देश की निर्भरता खत्म हो गई। चीजों की उपयुक्तता में, स्वामीनाथन को उच्च उपज वाले गेहूं और चावल की किस्मों को पुरस्कृत करने में उनकी भूमिका के लिए पहली बार विश्व खाद्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। भारत की अर्थव्यवस्था और स्थिति को बदलने वाले वैज्ञानिक को मैग्सेसे, पद्म श्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण सहित कई सम्मानों से नवाजा गया, लेकिन भारत रत्न नहीं। शायद उनकी उपलब्धियां इस कसौटी पर खरी नहीं उतरीं और न ही उनकी ल बी इतनी मजबूत थी।अगर तत्कालीन महत्वपूर्ण व्यावहारिकता की बात करें तो स्वामीनाथन की विजय अधिक उर्वरक और पानी के अनुप्रयोग के प्रति उत्तरदायी नये सामान्य उपभेदों या शपौधे के प्रकारश की क्षमता को पहचानने में निहित है।

यह याद रखने की जरूरत है कि उनके पास भाखड़ा नांगल बांध और दामोदर घाटी निगम की सुविधाएं थीं। स्वामीनाथन ेंषि विज्ञान के नवीनतम विकास से अवगत थे। इसके साथ-साथ उनकी क्षमता भी थी, जो पूरे देश में फसल क्षेत्रों में अपनी रणनीतिक ष्टि को वास्तविकता में बदलने के लिए नौकरशाही कठोरता और राजनीतिक प्रतिष्ठान के माध्यम से काम करने वाले वैज्ञानिकों के समूह के बीच दुर्लभ थी।

भारतीय कृषि क्षेत्र आज बेहतर स्थिति में है। लेकिन अभी एम एस स्वामीनाथन जैसे व्यक्तित्व का अभाव है जो मिशनरी उत्साह के साथ कृषिक्षेत्र के लिए रणनीतिक उद्देश्यों का पालन करेगा।

किसी को सी सुब्रमण्यम और बीशिव रामकृष्णन जैसे मंत्रियों और नौकरशाहों को उनका हक देना चाहिए जो वैज्ञानिक राय को महत्व देते थे और साहसिक निर्णय ले सकते थे। बोरल ग के मैक्सिकन गेहूं के १८,००० टन बीजों का आयात करना एक ऐसा निर्णय था जिसका उल्लेख किया जाना चाहिए। स्वामीनाथन नहीं रहे, लेकिन उनके विचार और उत्साह अल्पपोषण से लेकर पर्यावरणीय क्षरण और ग्लोबल वार्मिंग जैसी उभरती चुनौतियों का समाधान निकालने में लगे हुए हैं। हो सकता है इस राज्य (पंजाब) के मुख्यमंत्री से उर्वरक की बढ़ती कीमतों का कारण पूछने पर एक किसान को जेल में डाल दिया गया होगा, और उर्वरक मूल्य वृद्धि की समस्या ने इस प्रख्यात वैज्ञानिक को परेशान कर दिया होगा, और उन्होंने इसे कम करने के लिए खुद ही रास्ता तैयार कर लिया होगा। स्वामीनाथन के कितने ही सपने अधूरे रह गये। लेकिन उन्हें किसी भी हालत में नहीं छोड़ा जा सकता, अधूरा नहीं छोड़ा जा सकता है। स्वामीनाथन द्वारा जलाई गई मशाल को आगे बढ़ाना युवा ब्रिगेड पर निर्भर है। वह और उनकी टीम भारत से होने वाले वैश्विक खाद्य निर्यात के ४० प्रतिशत के लिए पूरे श्रेय के पात्र हैं। जलवायु परिवर्तन और घटते संसाधनों के साथ चुनौती बड़ी है। स्वामीनाथन ने इसका पूर्वाभास किया और एक सदाबहार क्रांति की कल्पना की, जिसे पारिस्थितिकी क्षति के बिना निरंतर उत्पादकता में सुधार द्वारा शुरू किया जा सकता है। ऐसी उनकी दृष्टि थी।

भारत-कनाडा बिगाड़-सावधान, आगे खाई है !

कनाडा के खिलाफ खालिस्तानी आतंकवाद के प्रति नरमी से लेकर, उसका राजनीतिक फायदा उठाने तक के भारत के आरोप, मुंहतोड़ जवाब के लिए सरकार के घरेलू समर्थकों से तालियां भले बजवा लें, पर कनाडा को अलग-थलग करने और भारत के लिए समर्थन जुटाने के लिए, खास मददगार नहीं हैं। उल्टे ऐसा लगता है कि इस मामले में भारत की एक कमजोरी ही पश्चिम के हाथ लग गई है। अक्सर कहा जाता है कि किसी देश की विदेश नीति, उसकी घरेलू नीति का ही विस्तार होती है। लेकिन, हरेक सामान्यीकरण की तरह, इस सूत्र में भी एक हद तक ही सच्चाई है। भारत और कनाडा के रिश्तों में ताजा बिगाड़ के सिलसिले में इस सच्चाई को याद रखना और भी जरूरी है। आखिरकार, कहा-सुनी के ताजा चक्र में कनाडा और भारत, एक-दूसरे पर विदेशी नीति के कदमों से, घरेलू तुच्छ राजनीतिक हित साधने के ही तो आरोप लगा रहे हैं। अगर भारत सरकार, कनाडा की ट्रूडो सरकार पर, अपने राजनीतिक लाभ के लिए, कनाडा को आधार बनाकर खासतौर पर भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देने में लगे, खालिस्तान समर्थकों के प्रति नरमी बरतने से लेकर उन्हें संरक्षण देने तक के आरोप लगा रही है, तो दोनों देशों के रिश्तों में मौजूदा बिगाड़ आया ही ट्रूडो के अपने देश की संसद में खड़े होकर यह आरोप लगाने के बाद आया है कि कनाडा निवासी किंतु भारत में आतंकवाद के लिए वांछित, खालिस्तान समर्थक नेता, निज्जर की हत्या में, भारतीय एजेंसियों का हाथ लगता है।

विदेश नीति के कदमों से सीधे-सीधे घरेलू राजनीतिक स्वार्थ साधे जाने के आरोपों के बाद, मामला सिर्फ कहा-सुनी तक सीमित नहीं रह सकता था और नहीं रहा है। ट्रूडो के संसद में उक्त आरोप लगाने के बाद ही, कनाडा ने सुरक्षा मामलों से जुड़े भारत के एक शीर्ष राजनयिक अधिकारी को निष्कासित भी कर दिया तथा बात और भी बिगाड़ते हुए, उसका नाम मीडिया में लीक भी कर दिया। जवाब में भारत ने भी, आरोपों को सिरे से खारिज करने के साथ ही, कनाडा के एक राजनयिक को इसी प्रकार निष्कासित कर दिया। दोनों ओर से एक-दूसरे देश के लिए प्रतिकूल ट्रेवल एडवाइजरी जारी किए जाने के एक चक्र के बाद, अंततरू भारत ने कनाडा के लिए वीजा सेवाओं पर भी रोक लगा दी है। उसके ऊपर से कनाडा पर कूटनीतिक सुविधाओं के दुरुपयोग का आरोप लगाते हुए, उसे भारत में अपने मिशन को सिकोड़ने के लिए भी कह दिया गया।

उल्टे इस बीच कनाडा ने निज्जर मामले में अपने आरोपों पर यह कहकर जोर और बढ़ा दिया है कि उसके पास भारतीय कूटनीतिज्ञों के संवादों के रूप में खुफिया जानकारियां हैं, जो संदेहों को पुख्ता करती हैं। इस दौरान उसने यह कहकर कि ये साक्ष्य उसे फाइव आईज नाम की, पांच पश्चिमी देशों की साझा खुफिया व्यवस्था में शामिल एक अन्य देश के जरिए हासिल हुए हैं, इस मामले में अमेरिका समेत अन्य पश्चिमी ताकतों को भी खींच लिया है। फाइव आईज में अमेरिका तथा कनाडा के अलावा यूके, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड भी शामिल हैं।

भारत की मुश्किलें बढ़ाते हुए, अमेरिका समेत इन पश्चिमी ताकतों ने भी इन खुफिया जानकारियों को आम तौर पर स्वीकार ही किया है और कनाडा के आरोपों को गंभीर बताते हुए, भारत से जांच में सहयोग करने का ही आग्रह किया है। अब तक यह भी एक प्रकार से साफ ही हो चुका है कि ट्रूडो जिन खुफिया जानकारियों की दुहाई दे रहे हैं, वास्तव में फाइव आईज के हिस्से के तौर पर खुद अमेरिका द्वारा ही मुहैया कराई गई थीं। जाहिर है कि यहां आकर यह विवाद, महज भारत-कनाडा विवाद नहीं रह गया है बल्कि कहीं बड़ा रूप ले चुका है। वास्तव में इस विवाद के ट्रूडो के संसद के बयान के जरिए सार्वजनिक होने के बाद से, यह जानकारी भी सामने आ चुकी है कि इससे पहले से कनाडा, भारत के साथ यह मामला उठा रहा था। यहां तक कि जी-२० के दौरान, विशेष रूप से मोदी-ट्रूडो की उप-वार्ताओं में न सिर्फ यह मुद्दा उठा था बल्कि उस पर तीखे मतभेद भी सामने आए थे। इतना ही नहीं, उसी दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने भी इस मामले में हस्तक्षेप किया था और भारत तथा कनाडा के बीच बात बिगड़ने से बचाने की कोशिश की थी। बहरहाल, इस विवाद के सामने आने के बाद से पश्चिमी ताकतों का आम तौर पर जो रुख देखने को मिल रहा है, उससे इतना तो साफ ही है कि भारत उनसे, बीच-बचाव कराने से ज्यादा मदद या समर्थन की उम्मीद नहीं कर सकता है।

इसे देखते हुए, कनाडा के खिलाफ खालिस्तानी आतंकवाद के प्रति नरमी से लेकर, उसका राजनीतिक फायदा उठाने तक के भारत के आरोप, मुंहतोड़ जवाब के लिए सरकार के घरेलू समर्थकों से तालियां भले बजवा लें, पर कनाडा को अलग-थलग करने और भारत के लिए समर्थन जुटाने के लिए, खास मददगार नहीं हैं। उल्टे ऐसा लगता है कि इस मामले में भारत की एक कमजोरी ही पश्चिम के हाथ लग गई है, जिसका वह भारत को और दबाकर अपने खेमे में बांधे रखने के लिए इस्तेमाल करने में संकोच नहीं करेगा। कहने की जरूरत नहीं है कि मोदी राज में भारत में जिस तरह वास्तविकता में कानून का राज कमजोर हुआ है और एन्काउंटर से लेकर बुलडोजर तक के श्न्यायश को बढ़ावा दिया जा रहा है, उसने शेष दुनिया की नजरों में श्श्यह भारत की नीति नहीं हैश्श के हमारे खंडनों की साख को बहुत घटा दिया है।

इजरायल की मोसाद जैसी एजेंसियों की इसी तरह की कार्रवाइयों को वर्तमान भारतीय शासन किस तरह अनुकरणीय उदाहरण की तरह देखता है, जाहिर है कि यह भी बाकी दुनिया से छुपा हुआ नहीं है। लेकिन, यह किसी को नहीं भूलना चाहिए कि इजरायल, पश्चिमी ताकतों के समर्थन के बल पर ही, दूसरे देशों की धरती पर अपने विरोधियों को खत्म या लिक्विडेट करने की कार्रवाइयां जारी रखे सका है। और सब कुछ के बावजूद भारत, पश्चिमी ताकतों के वैसे अकुंठ समर्थन की उम्मीद नहीं कर सकता है, जैसा समर्थन जाहिर है कि पश्चिम के अपने ही घरेलू राजनीतिक नीतिगत कारणों से, इजरायल को सहज उपलब्ध है।

इन हालात में भारत को सरकार के घरेलू समर्थकों को संतुष्टद्ध करने के लिए जैसे को तैसा जवाब देने के लालच में फंसने के बजाय, बारीक तथा धीरज की मांग करने वाले, कूटनीतिक तरीकों से ही रिश्तों की इस उलझी हुई गांठ को खोलने की कोशिश करनी चाहिए। कनाडा के लिए वीजा सेवाएं बंद करने जैसे कदम, ऐसी ही जवाबी प्रतिक्रिया के साथ, टकराव को और बढ़ाने के अलावा, कनाडा में रह रही भारतीय मूल के लोगों की खासी आबादी के लिए और कनाडा पढ़ने जाने वाले छात्रों की विशाल संख्या के लिए भी, परेशानी बढ़ाने का ही काम करेंगे। याद रहे कि पिछले साल कनाडा ने तीन लाख से ज्यादा भारतीयों के लिए वीजा दिए थे और भारत ने उससे थोड़े ही कम कनाडावासियों के लिए। इस विशाल संख्या को, बिगड़े रिश्ते की गांठ को खोलने के साधन के रूप में इस्तेमाल करने में ही समझदारी है, न कि उसे गुरुगांठ में तब्दील करने का बहाना बनाने में। इधर देश के अंदर, कनाडा स्थित नामित खालिस्तान समर्थक आतंकवादी, गुरुपतवंत ङ्क्षसह पन्नू की पंजाब स्थित संपत्तियों को जब्त करने के फौरन बाद, राष्ट्ङ्कीय सुरक्षा एजेंसी (एनआइए) ने अपनी कार्रवाइयों का दायरा और बढ़ाया है। उसने कनाडा, अमेरिका, यूएई, आस्ट्रेलिया आदि में जमे, ऐसे १९ वांछितों की सूची जारी कर, उनके ओसीआई कार्ड रद्द कराने की तथा उनकी भारत स्थित संपत्तियों की पहचान से शुरू कर, आर्थिक मुश्कें कसने की कार्रवाइयां शुरू कर दी हैं। ये कार्रवाइयां सबसे पहले तो इन सभी के लिए भारत के दरवाजे बंद करेंगी।

नौसड़-पैड़लेगंज सिक्सलेन-हाईवे पर बढ़ी किचकिच तो गलियों में भी मचा कोहराम, सुकून-नींद सब हराम

गोरखपुर। सिक्सलेन पर चल रहे काम की वजह से फलमंडी के सामने से मुड़कर लोग बेतियाहाता आवास विकास क लोनी होते हुए हनुमान मंदिर के पास पहुंच रहे हैं। इस वजह से बेतियाहाता से आने वाले रोड पर जाम लग जा रहा है। यहां से फलमंडी जाने वाले छोटे वाहन भी गुजर रहे हैं, जिससे परेशानी हो रही है। नौसड़ से पैडलेगंज तक सिक्सलेन और ट्रांसपोर्टनगर से लेकर देवरिया बाईपास तिराहा के आगे तक सिक्सलेन फ्लाईओवर के निर्माण के चलते हाईवे पर चलना मुश्किल हो गया है। जगह-जगह वैरियर, उबड़-खाबड़ सड़कें और मिट्टी-गिट्टी के चलते जाम लग जा रहा है। गाड़ियां रेंगती हुई खिसकती हैं।

इससे परेशान होकर अब लोगों ने गलियों से आना-जाना शुरू कर दिया है। जिन गलियों से गाड़ियां गुजर रही हैं, वहां दिन भर कोहराम मचने से लोगों का सुकून और नींद सब हराम हो गई है। बुजुर्ग और बीमार गाड़ियों के ह र्न बजने से परेशान हैं। खासकर हृदय रोगियों को बेचौनी होने लगी है।

नौसड़ से पैडलेगंज तक सिक्सलेन रोड का निर्माण कार्य चल रहा है। इसके साथ ही ट्रांसपोर्ट नगर से लेकर अमर उजाला तिराहा से आगे दाउदपुर तक फ्लाईओवर भी बनाया जा रहा है। सड़क किनारे नाला निर्माण के लिए जगह-जगह खोदाई हुई है। मिट्टी भरने का काम भी जारी है। बारिश में सड़कें कीचड़ से सन जा रही हैं।

सड़क और ओवरब्रिज का काम प्रभावित न हो, इसलिए शहर से वाराणसी और लखनऊ की ओर जाने भारी वाहनों को सुबह आठ बजे से लेकर रात आठ बजे तक देवरिया बाईपास की ओर डायवर्ट किया जा रहा है। लेकिन कार-जीप, माल ढुलाई के छोटे वाहन व दो पहिया वाहनों के चालक दुश्वारियों से बचने के लिए गलियों से आने-जाने लगे हैं। इससे गलियों में जाम भी लग रहा है।

टीपीनगर से मुंशी प्रेमचंद पार्क रोड पर बढ़ा दबाव

बुधवार को बारिश हो रही थी। दोपहर करीब ०१रू४५ बजे नंदानगर में रहने वाले निसार बाइक से टीपीनगर से पैडलेगंज की ओर जा रहे थे। टीपीनगर से आगे बढ़ने पर सड़क के किनारे कीचड़ देखकर उन्होंने अपना रास्ता बदल दिया। वह टीपीनगर पुलिस चौकी से प्रेमचंद पार्क की तरफ मुड़ गए।

इस रोड पर आगे जाकर नार्मल रोड तिराहे पर फंस गए। इस दौरान वह करीब १० मिनट तक जाम से जूझते रहे। इसके बाद किसी तरह से आवागमन सामान्य हुआ। दुकानदार अच्युतानंद शर्मा ने बताया कि सड़क बनने की वजह से जिन लोगों को पैडलेगंज जाना है वह लोग भी मुंशी प्रेमचंद पार्क से बेतियाहाता होकर आ जा रहे हैं। इससे यहां पर जाम लग जा रहा है।

बेतियाहाता आवास विकास कश्वलोनी में भी बढ़ी वाहनों की आवाजाही

सिक्सलेन पर चल रहे काम की वजह से फलमंडी के सामने से मुड़कर लोग बेतियाहाता आवास विकास क लोनी होते हुए हनुमान मंदिर के पास पहुंच रहे हैं। इस वजह से बेतियाहाता से आने वाले रोड पर जाम लग जा रहा है। यहां से फलमंडी जाने वाले छोटे वाहन भी गुजर रहे हैं, जिससे परेशानी हो रही है। टीपीनगर से आगे जाने पर एक कार एजेंसी के आसपास सड़क किनारे कीचड़ होने से लोग बच बचाकर चलते नजर आए।

लोग बोले...

सिक्सलेन का निर्माण होने से सबसे ज्यादा असर टीपीनगर से मुंशीप्रेम चंद पार्क रोड पर हुआ है। इस रोड पर यातायात बढ़ गया है। अतिक्रमण होने की वजह से अक्सर जाम लगता है। जाम से हम लोग परेशान हो गए हैं, ग्राहक भी कम आते हैं।- अच्युतानंद शर्मा, दुकानदार, मुंशी प्रेमचंद पार्क रोड। पूरे दिन घर के सामने से गाड़ियां गुजरती हैं। इनता शोर-शराबा हो रहा है कि दिन हो या रात सुकून छिन गया है। यही नहीं गाड़ियों के आने-जाने से मां को तो घबराहट होने लगती है।- राजीव मिश्रा, बेतियाहाता आवास विकास कॉलोनी।

सिक्सलेन से शहर में आने-जाने के लिए जितने रास्ते हैं अब उन पर भीड़ हो जा रही है।

सुबह मैं दुकान पर आ रहा था। तब हनुमान मंदिर के पास मोड़ पर लगे जाम में फंस गया।- गणेश यादव, टीपीनगर। सड़क बनने की वजह से सबसे ज्यादा लोड बेतियाहाता रोड पर बढ़ा है। सुबह आफिस जाने और शाम को बाजार के समय में समस्या आ रही है।

हम लोग तो परेशान हो गए हैं।-श्रवण सिंह, महेवा कालोनी। पैडलेगंज से लेकर टीपीनगर तक आने जाने में काफी दिक्कत हो रही है। कोई दूसरा विकल्प नहीं होने की वजह से लोग गली मोहल्लों को चुन रहे हैं। लेकिन फिर भी राहत नहीं मिल पा रही है।- निसार खान, राहगीर।

बदल रहा है गोरखपुर

गोरखपुर जंक्शन के पुनर्निर्माण के लिए छह कंपनियों ने दिखाई रुचि 498 करोड़ रुपये आएगी लागत

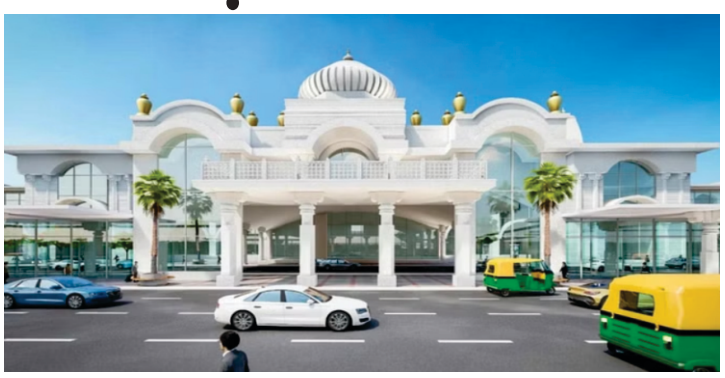

गोरखपुर। पूर्वोत्तर रेलवे सीपीआरओ पंकज कुमार सिंह ने कहा कि गोरखपुर रेलवे स्टेशन पुनर्निर्माण के लिए एजेंसी निर्धारण की प्रक्रिया चल रही है। प्रक्रिया पूरी कर शीघ्र ही कार्य शुरू किया जाएगा। स्टेशन को ४६८ करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया जाएगा। पुनर्निर्माण किए जा रहे गोरखपुर जंक्शन स्टेशन को वर्ल्ड क्लास रेलवे स्टेशन बनाने के लिए अब तक छह कंपनियों ने रुचि दिखाई है। इसमें पांच दक्षिण भारतीय और एक उत्तर भारत की कंपनी है। अब इन कंपनियों के संसाधनों की जांच की जा रही है। जांच पूरी होने के बाद एक कंपनी को नोडल एजेंसी नामित किया जाएगा। दिसंबर में निर्माण कार्य शुरू कराने की तैयारी है।

बीते सात जुलाई को प्रधानमंत्री ने गोरखपुर जंक्शन स्टेशन के पुनर्निर्माण कार्य का शिलान्यास किया था। इसकी लागत ४६८ करोड़ रुपये है। स्टेशन के मुख्य भवन को गोरखनाथ मंदिर, गीता प्रेस समेत कई ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व के स्थलों की तर्ज पर विकसित किया जाएगा। अभी इस स्टेशन पर हर दिन लगभग ६३ हजार यात्रियों का आवागमन हो रहा है। भविष्य में यहां से करीब १,६८,००० यात्रियों का प्रतिदिन आवागमन होगा। उसी को ध्यान में रखकर स्टेशन का पुनर्निर्माण किया जा रहा है। पिछले महीने इसके लिए टेंडर खोला गया था। अब तक छह कंपनियों ने निर्माण कार्य में रुचि दिखाई है। अब आवेदनकर्ता कंपनियों के पास उपलब्ध संसाधनों, कर्मचारियों व मजदूरों की संख्या, पिछले कार्य अनुभव आदि की जानकारी जुटाई जा रही है। इसी आधार पर कार्यदाई एजेंसी का चयन किया जाएगा। यह प्रक्रिया नवंबर तक पूरी की जाएगी। दिसंबर में हर हाल में नया निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा।

टिकट खिड़की का बढ़ेगा दायरा, गेट पर होगी हरियाली

स्टेशन के पुनर्निर्माण के दौरान टिकट काउंटरों की संख्या बढ़ाई जाएगी। नए भवन में ३०० वर्ग मीटर में टिकट खिड़कियां बनाई जाएंगी। स्टेशन परिसर में दो मल्टीपरपज ट वर भी बनाए जाएंगे, जिसमें मल्टी लेवल कार पार्किंग, होटल, कामर्शियल श प इत्यादि होगा।

दोनों प्रवेश द्वार के सर्कुलेटिंग क्षेत्र में हरित पट्टी (ग्रीन बेल्ट) विकसित की जाएगी। प्रस्तावित स्टेशन का निर्माण १७,६०० वर्ग मीटर। १०,८०० वर्ग मीटर में रूफ प्लाजा होगा, जिसमें फूड आउटलेट, वेटिंग ह ल, एटीएम एवं किड्स प्ले एरिया होगा।

पूर्वोत्तर रेलवे सीपीआरओ पंकज कुमार सिंह ने कहा कि गोरखपुर रेलवे स्टेशन पुनर्निर्माण के लिए एजेंसी निर्धारण की प्रक्रिया चल रही है। प्रक्रिया पूरी कर शीघ्र ही कार्य शुरू किया जाएगा। स्टेशन को ४६८ करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया जाएगा।

गोरखपुर शहर में मिले देहात परमिट के आटो

धमाचौकड़ी मचाने वाले 68 आटो, 12 ई-रिक्शा के काटे चालान

गोरखपुर। एसपी ट्रैफिक श्यामदेव विंद ने कहा कि देहात के परमिट वाले आटो भी शहर में चलते मिले हैं। इसके अलावा ई-रिक्शा वाले चौराहे और बीच सड़क पर ही सवारी उतारते व चढ़ाते मिले हैं। सबके खिलाफ कार्रवाई की गई है। ६८ आटो और १२ ई-रिक्शा वालों का चालान काटकर जुर्माना वसूला गया है। आगे भी अभियान जारी रहेगा। गोरखपुर शहर को जाम से मुक्ति दिलाने के लिए प्राइवेट बसों को बाहर करने के बाद आटो-ई-रिक्शा की धमाचौकड़ी पर यातायात पुलिस ने सख्ती शुरू कर दी है। बुधवार को यूनिवर्सिटी चौक, आंबेडकर चौक, शास्त्री चौक, मोहद्दीपुर में अभियान चलाकर चेकिंग की गई। इस दौरान देहात के परमिट वाले अ टो भी शहर में चलते मिले तो वहीं चौराहों पर ई-रिक्शा वालों की मनमानी भी सामने आई है। यातायात पुलिस ने ६८ आटो और १२ ई-रिक्शा वालों का चालान काटा।

जानकारी के मुताबिक, शहर में जाम एक बड़ी समस्या है। इससे निपटने के लिए एडीजी अखिल कुमार, कमिश्नर अनिल ढींगरा ने प्राइवेट बसों को शहर से बाहर करने का फैसला लिया है। कुशीनगर, देवरिया और बिहार की ओर जाने वाली बसों के लिए नंदानगर में स्टैंड भी बना दिया गया। लेकिन इसके बाद अ टो और ई-रिक्शा की धमाचौकड़ी सामने आ गई।

मामले को अमर उजाला ने प्रमुखता से उठाया तो एसएसपी ड . गौरव ग्रोवर के आदेश पर अभियान चलाया गया। एसपी ट्रैफिक ड . श्यामदेव विंद खुद सड़कों पर उतरे और अभियान चलाया गया। यातायात पुलिस ने अलग-अलग चौराहों पर जांच की तो पता चला कि गोरखपुर में कैंपियरगंज, पीपीगंज जैसे कई देहात इलाकों के अ टो भी फर्राटे भर रहे हैं। अ टो वाले चौराहे पर ही सवारी भी भरते मिले हैं।

मोहद्दीपुर में ग्रीन सिग्नल एक तरफ से था और चौराहे पर ही अ टो वाले सवारी उतार रहे थे, जिस वजह से जाम लग गया था। एसपी ट्रैफिक ने अ टो चालकों को रोका और जांच कर सभी पर कार्रवाई की। चेतावनी दी गई है कि अगर दोबारा गलती मिली तो अ टो सीज किया जाएगा। बाहर के परमिट वालों को बताया गया कि वह किसी भी हाल में अपनी सीमा के बाहर शहर में इंट्री में नहीं करेंगे। वहीं, कई ऐसे अ टो चालक भी मिले, जिनके पास लाइसेंस तक नहीं था, जो आम लोगों के लिए खतरा भी हैं।

अब बारिश में भी ड्यूटी करते मिलेगी यातायात पुलिस

यातायात पुलिस वालों को अब रेनकोट दिया गया है। वह बारिश में भी अब ड्यूटी कर सकेंगे। दरअसल, दो दिन से बारिश हो रही है। देखा गया कि पुलिस के हटते ही जाम की स्थिति हो जा रही थी। इसे देखते हुए एसपी ट्रैफिक ने सभी पुलिस वालों को रेनकोट वितरित किया है। एसपी ट्रैफिक श्यामदेव ने बताया कि यातायात पुलिस के साथ ही आम लोगों को भी दिक्कत हो रही थी। इसे देखते हुए रेनकोट का वितरण किया गया है।

एसपी ट्रैफिक श्यामदेव विंद ने कहा कि देहात के परमिट वाले अ टो भी शहर में चलते मिले हैं। इसके अलावा ई-रिक्शा वाले चौराहे और बीच सड़क पर ही सवारी उतारते व चढ़ाते मिले हैं। सबके खिलाफ कार्रवाई की गई है। ६८ अ टो और १२ ई-रिक्शा वालों का चालान काटकर जुर्माना वसूला गया है। आगे भी अभियान जारी रहेगा।

देवरिया कांड से सबक-गोरखपुर पुलिस तैयार कर रही विवादित मामलों की सूची

गोरखपुर। एडीजी अखिल कुमार व आईजी जे रविंद्र ने पुलिस को जमीन विवाद के मामलों को गंभीरता से लेने को कहा तो एसएसपी डा . गौरव ग्रोवर ने रजिस्टर में ऐसे मामलों को दर्ज करने को कहा गया है। इसके अलावा रजिस्टर में दर्ज मामलों को प्रशासन के सहयोग से निपटारा करने का भी आदेश दिया गया है। देवरिया कांड के बाद पुलिस अफसरों ने सतर्कता बरतनी शुरू कर दी है। एसएसपी डा . गौरव ग्रोवर ने पुलिस वालों को जमीन विवाद के मामलों में प्रशासन के सहयोग से निपटारा का आदेश दिया है तो साथ ही १० साल के विवाद का रिकार्ड भी खंगाला जा रहा है। पुलिस ऐसे विवादों की सूची तैयार कर रही है, जिसकी वजह से घटना की आशंका हो। पुलिस थाना और तहसील दिवस में आने वाले मामलों के जरिये सूची तैयार कर कार्रवाई करेगी। अगर, कोई मामला न्यायालय में है तो पीड़ित को रास्ता भी बताएगी कि इसका निपटारा कोर्ट के जरिये ही संभव है। जानकारी के मुताबिक, देवरिया के रुद्रपुर इलाके में जमीन विवाद में ही छह लोगों की हत्या का मामला सामने आया है। हालांकि वहां का मामला कोर्ट में विचाराधीन था, लेकिन घटना का असर देवरिया ही नहीं, बल्कि आसपास के जिलों में भी नजर आने लगा। एडीजी अखिल कुमार व आईजी जे रविंद्र ने पुलिस को जमीन विवाद के मामलों को गंभीरता से लेने को कहा तो एसएसपी डा . गौरव ग्रोवर ने रजिस्टर में ऐसे मामलों को दर्ज करने को कहा गया है। इसके अलावा रजिस्टर में दर्ज मामलों को प्रशासन के सहयोग से निपटारा करने का भी आदेश दिया गया है। कैंपियरगंज का एक मामला जमीन विवाद का सामने आने पर एसएसपी ने खुद एसडीएम और सीओ से बातचीत की है, ताकि निपटारा हो सके। एसएसपी डा . गौरव ग्रोवर ने बताया कि पुलिस जमीन के मामलों का निपटारा प्रशासन के सहयोग से करेगी।

रामनगर की रामलीला–अनूठी है राम की भूमिका निभा रहे बच्चे की कहानी, स्वर परीक्षा देने 15 किमी पैदल निकले दीपक

चंदौली। यूनेस्को के विश्व धरोहर में शामिल २२१ वर्ष पुरानी रामनगर की विश्वप्रसिद्ध रामलीला में इस वर्ष राम की भूमिका चंदौली के नियामताबाद विकासखंड के छोटे से गांव रंगौली के निवासी नरेंद्र पांडेय के इकलौते पुत्र दीपक पांडेय निभा रहे हैं। पिता नरेंद्र पांडेय चंद्ररखा में एक स्कूल की बस चलाते हैं और दीपक भी उसी स्कूल में सातवीं के छात्र हैं।

रामनगर की विश्वप्रसिद्ध रामलीला देखने आई भीड़ में खड़े एक बच्चे ने अपने पिता से पूछा-पापा क्या मैं कभी राम नहीं बन सकता, क्या मैं कभी हाथी पर नहीं चढ़ूंगा, क्या मैं कभी राजा साहब से नहीं मिलूंगा। पिता ने हंसी में बात टाल दी और कहा कि यह आसान नहीं है और न ही मुझे मालूम है कि राम कैसे बनते हैं। बच्चे ने हठ किया तो पिता ने खिलौना दिलाकर फुसला दिया। लेकिन बच्चे पर पूरे वर्ष बस एक ही धुन सवार थी कि मुझे राम बनना है। काफी मेहनत और प्रयास के बाद उसने खुद ही चयन प्रक्रिया की जानकारी जुटा ली और एक दिन पिता से कहा कि मुझे रामनगर ले चलिए, स्वर परीक्षा देनी है। पिता ने कहा समय नहीं है। बच्चा अकेले ही रामनगर चला गया और स्वर परीक्षा के बाद रामनगर के महराजा ने उसे राम के रूप में चुन लिया। घर आने पर पिता से कहा कि अब आप नहीं जाने देंगे तो महाराज खुद मुझे ले जाएंगे। मैं राम बन गया हूं। यह कहानी है चंदौली के १२ वर्षीय बच्चे दीपक पांडेय की।

यूनेस्को के विश्व धरोहर में शामिल २२१ वर्ष पुरानी रामनगर की विश्वप्रसिद्ध रामलीला में इस वर्ष राम की भूमिका चंदौली के नियामताबाद विकासखंड के छोटे से गांव रंगौली के निवासी नरेंद्र पांडेय के इकलौते पुत्र दीपक पांडेय निभा रहे हैं। पिता नरेंद्र पांडेय चंद्ररखा में एक स्कूल की बस चलाते हैं और दीपक भी उसी स्कूल में सातवीं के छात्र हैं।

घर पर पत्नी आरती और दो छोटी बेटियां चांदनी और सुषमा हैं। नरेंद्र पांडेय ने बताया कि हमारे पूर्वज रामलीला के नेमी थे। मेरे पिताजी ने भी एक दिन की भी लीला नागा नहीं की। उनके बाद हमे जब कभी समय मिलता, रामलीला चला जाता था। २०२२ में पुत्र दीपक को भी रामलीला का मेला दिखाने ले गया था। लेकिन एक ही दिन में रामनगर की रामलीला उसके जेहन में ऐसी बसी की फिर उसको राम बनने की धुन सवार हो गई। मेले में ही हठ करने लगा कि मुझे पता करना है कि राम कैसे बनते हैं। मैने खिलौने दिलाकर उसके फुसला दिया लेकिन घर आने के बाद भी दिन-रात वह उसी के बारे में सोचता रहा और खुद ही जानकारी की और परीक्षा देने गया। जब आकर बताया कि मेरा चयन राम के लिए हो गया है तो हमें एकबारगी विश्वास नहीं हुआ। जब किले में गए और प्रशिक्षण शुरू हुआ तो लगा जैसे भगवान की पा हो गई है।

भगवान राम ने सुन ली बच्चे के दिल की आवाज

नरेंद्र पांडेय ने बताया कि हमारे पूर्वजों के कई जन्मों के पुण्य फलीभूत हुए हैं। बेटे ने मेले में जो कहा था वह उसकी हृदय की आवाज थी और शायद भगवान राम ने एक बच्चे की हृदय की बात सुन ली। नहीं तो हम कभी सपने में भी नहीं सोचे थे कि जिस राम को देखने के लिए हमारी पीढि या कई किलोमीटर पैदल जाया करती थी वह राम हमारे ही घर में होंगे। बताया कि संस्कारवश दीपक ने पूजा-पाठ करना शुरू कर दिया था। जिसके वजह से उसकी सस्ंत अच्छी थी। स्वर परीक्षा में यही उसके काम आया और उसने सस्ंत के श्लोक अन्य बच्चों से शुद्ध पढ़े, जो चयन का प्रमुख कारण बना।

एक महीने से किले में दीपक के साथ रह रहीं मां आरती

रामनगर की रामलीला के सभी पात्र ब्राह्मण होते हैं। केवल रावण के सेना में अन्य जातियों के छोटे-छोटे बच्चों को शामिल किया जाता है। रामलीला के मुख्य पात्र राम, सीता, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न में हर साल परिवर्तन किया जाता है। चुनाव में सर्वप्रथम वरीयता उनके आवाज को दिया जाता है। साथ ही उनका उपनयन संस्कार होना अनिवार्य है। उनकी कमनीयता,रंग रूप का भी ध्यान रखा जाता है। चयन की प्रक्रिया दो चरणों में होती है अंतिम चरण के पांच नामों पर महाराज द्वारा स्वींति प्रदान की जाती है। प्रथम गणेश पूजन के साथ ही इन पात्रों का प्रशिक्षण रामनगर गंगा घाट स्थित धर्मशाला में शुरू हो जाता है। प्रशिक्षण अवधि के दौरान बालकों को सात्विक रहना पड़ता है। उनके साबुन लगाने और लहसुन,प्यास, खट्टा-मिठ्ठा खाने पर पूर्ण प्रतिबंध रहता है। दीपक के साथ उनकी मां आरती भी एक महीने से किले में रह रही हैं। पिता नरेंद्र ने बताया कि वे रोजाना लीला में जाते हैं, आरती के बाद पुत्र से मिलकर घर चले आते हैं।

प्रशिक्षण के दौरान भी पूरा अनुशासन, नाम से नहीं बुलाया जाता

रामलीला के पात्रों के प्रशिक्षण के दौरान अनुशासन और रामादि की भावना और गौरव का प्रारंभ हो जाता है। पंच स्वरूपों को प्रशिक्षण के दौरान उनके नाम राम,सीता, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न ही पुकारा जाता है। पात्रों में परस्पर वैसा व्यवहार भी प्रारंभ हो जाता है। श्रीराम के उठ खड़े होने पर अन्य सभी पात्र उठ खड़े होते हैं, संवाद समाप्त होने पर राम के बैठने के बाद सभी पात्र उनको प्रणाम कर वरिष्ठता के क्रम में बैठते हैं। इसमें एक खास बता यह है कि भरत बना पात्र अगले वर्ष परीक्षा के बाद राम की भूमिका निभा सकता है। शत्रुघ्न भरत का पात्र निभा सकते हैं। लेकिन राम की भूमिका निभा चुका पात्र लक्ष्मण आदि की भूमिका नहीं निभा सकता। बशर्ते वह राम की पात्रता पर खरा पाये जाने पर अगले वर्ष पुनरूराम बनाया जा सकता है।

औद्योगिक क्षेत्र का विकास यूपीसीडा के हाथ 26 करोड़ से बनाएगा सड़कें और नाले

मेरठ। उद्यमियों की समस्या को देख शासन ने यूपीसीडा को मेरठ के परतापुर स्थित औद्योगिक क्षेत्र के विकास की जिम्मेदारी सौंपी है। इसके लिए यूपीसीडा के अधिकारी निगम पहुंचे और विकास की रूपरेखा बनाई मेरठ के परतापुर स्थित औद्योगिक क्षेत्र में अब यूपीसीडा (उत्तर प्रदेश औद्योगिक विकास प्राधिकरण) विकास के पंख लगाएगा। अटल योजना के तहत २६ करोड़ की लागत से सड़कों और नालों का निर्माण कराएगा। शासन से हरी झंडी मिलने के बाद यूपीसीडा के अधिकारियों ने बुधवार सुबह मौका मुआयना कर शाम को नगर निगम में मुख्य अभियंता के साथ बैठक कर क्षेत्र के विकास की रूपरेखा बनाई।शहर में सड़क निर्माण सहित विकास कार्यो को लेकर शासन स्तर से रोजाना म नीटरिंग हो रही है। नगर निगम द्वारा चलाए जा रहे गड्ढा मुक्त अभियान, सड़क निर्माण, साफ सफाई को लेकर प्रमुख सचिव नगर विकास अधिकारी अमृत अभिजात, विशेष सचिव, नगर विकास मंत्री और स्वच्छ भारत मिशन के डायरेक्टर नितिन बंसल रोजाना वीडियो कांफ्रेसिंग कर नगर आयुक्त से जानकारी लेते हैं। इसके बाद भी उद्योग बंधुओं द्वारा जिला प्रशासन की बैठक में सड़क व नालों का निर्माण न होने पर लगातार नाराजगी जताते रहे हैं। इसको लेकर शासन ने निगम द्वारा औद्योगिक क्षेत्र में कराए गए कार्यो पर रोक लगाकर यूपीसीडा से विकास कराने की निर्णय लिया है।

बुधवार सुबह यूपीसीडा के डिप्टी जीएम आरएस कपूर अपनी टीम के साथ परतापुर औद्योगिक क्षेत्र पहुंचे। व्यापपारियों से मुलाकात कर सड़क और नालों की स्थिति देखी। इसके बाद यूपीसीडा की टीम नगर निगम पहुंची। यहां मुख्य अभियंता देवेंद्र कुमार के साथ बैठक की। निगम द्वारा औद्योगिक इलाके में विकास के एजेंडे के बारे में पता किया गया है। जिसमें बताया गया कि औद्योगिक इलाके में २६ करोड़ की लागत से सड़क और नालों का निर्माण अब यूपीसीडा करेगा।

इन सड़कों का यूपीसीडा करेगा निर्माण

१. वार्ड-६ मोहकमपुर औद्योगिक क्षेत्र में फेस-१ में सड़क और नाले का निर्माण

२. वार्ड-६ मोहकमपुर औद्योगिक क्षेत्र में फेस-१ में जय दुर्गा प्र पर्टी से न्यू शम्भू नगर गेट तक सड़क निर्माण

३. वार्ड-६ मोहकमपुर औद्योगिक क्षेत्र फेस-१ एसके वेल्डिंग गली सहित तीन जगह पर सड़क, नाले का निर्माण

४. वार्ड-६, ३१ और २८ में दिल्ली रोड स्थित गौशाला से डीएन प लीटेक्निक क लेज के पास नाले और सड़क का निर्माण

५. वार्ड-२८ इंद्रापुरम में नाली और डेन्स की सड़क का निर्माण

६.वार्ड-२८ उद्योगपुरम औद्योगिक डी. ६० स्टीलिंग स्पोर्ट तक सड़क और नाले का निर्माण

७. वार्ड-६ दिल्ली रोड पर मोहकमपुर सरस्वती औद्योगिक क्षेत्र में सड़क और नाली का निर्माण

परतापुर औद्योगिक क्षेत्र में पांच सड़कों पर करीब पांच करोड़ रुपये की लागत से नगर निगम निर्माण कर चुका है। अब अन्य सड़क, नाले या नाली का निर्माण यूपीसीडा द्वारा कराए जाने की बात हुई है। अभी शासन स्तर से निगम को कोई पत्र नहीं मिला है। -देवेंद्र कुमार, मुख्य अभियंता नगर नगर

आर्थिक तंगी से नहीं छूटेगी आठवीं के बाद पढ़ाई मिलेंगे 12 हजार रुपये सालाना, ऐसे करें आवेदन

अलीगढ़। इस योजना के तहत प्रत्येक चयनित छात्र को १२,००० रुपये सालाना मिलते हैं। इस छात्रवृति के लिए वही विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं, जिनके माता-पिता की आमदनी प्रति वर्ष ३,५०,००० रुपये से अधिक न हो। ८वीं कक्षा तक शिक्षा मुफ्त है, अब सरकार ने ऐसी व्यवस्था की है जिससे परिवार की आर्थिक तंगी के कारण ८वीं के बाद छात्रों की पढ़ाई नहीं छूटेगी। केंद्र सरकार ने ९वीं से १२वीं कक्षा तक के मेधावी छात्रों को शैक्षणिक सत्र २०२३-२४ के लिए राष्ट्रीय साधन-सह-योग्यता छात्रवृत्ति योजना (एनएमएमएसएस) के तहत एक लाख आवेदन आमंत्रित किए हैं। चुने गए छात्रों को १२ हजार रुपये सालाना छात्रवृत्ति मिलेगी।

ऐसे करें आवेदन

शिक्षा मंत्रालय के अधिकारी के मुताबिक, ८वीं कक्षा के बाद आर्थिक दिक्कतों के कारण मेधावी छात्र शिक्षा पूरी नहीं कर पाते हैं। ऐसे में ९वीं से १२वीं कक्षा तक के आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को छात्रवृत्ति देने का फैसला किया गया है। इसके लिए राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल (एनएसपी) पर आनलाइन आवेदन और पंजीकरण विंडो खुल गई है। इच्छुक विद्यार्थी ३० नवंबर तक आनलाइन आवेदन कर सकते हैं। शिक्षा मंत्रालय द्वारा लागू इस छात्रवृत्ति योजना के तहत आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी छात्रों को पढ़ाई बीच में छोड़ने की समस्या से निजात दिलाने और उन्हें आगे अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

परिवार की सालाना आय 3.5 लाख रुपये से कम वाले होंगे पात्र

इस योजना के तहत प्रत्येक चयनित छात्र को १२,००० रुपये सालाना मिलते हैं। इस छात्रवृति के लिए वही विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं, जिनके माता-पिता की आमदनी प्रति वर्ष ३,५०,००० रुपये से अधिक न हो। इसके अलावा सातवीं कक्षा की परीक्षा में न्यूनतम ५५ फीसदी अंक या समकक्ष ग्रेड होना अनिवार्य है। अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए इस योग्यता में पांच फीसदी की छूट रहेगी।

खौफनाक–जमाने के डर से उजाड़ ली दुनिया

होटल के बाथरूम में मिलीं लाशें

आमिर–साजिदा की जिंदगी का दर्दनाक अंत

मेरठ। आमिर और साजिदा एक दूसरे से निकाह करना चाहते थे। लेकिन जमाने के डर से दोनों ने होटल के बाथरूम में फांसी लगाकर अपनी दुनिया उजाड़ ली। जिंदा तो एक-दूजे के नहीं हो सके लेकिन मौत को दोनों ने एक साथ गले लगा लिया। मेरठ जनपद में कंकरखेड़ा के सरधना रोड पर जेपी होटल में प्रेमी युगल ने फांसी लगाकर जान दे दी।

दोनों के शव बाथरूम में दुपट्टे से लटके मिले। दोनों की पहचान मुजफ्फरनगर के रतनपुरी थाना क्षेत्र के गांव रियावली निवासी आमिर (२०) और साजिदा (१६) के रूप में हुई।

वहीं, आत्महत्या की सूचना पर रतनपुरी थाना पुलिस और मृतकों के परिजन मेरठ पहुंच गए। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। रियावली गांव के आमिर और शाहिदा के बीच पिछले कुछ दिनों से प्रेम प्रसंग चल रहा था। दोनों शादी करना चाहते थे। तीन दिन पहले दोनों के परिजनों को इसकी जानकारी हुई तो उन्होंने विरोध किया। इसके बाद सोमवार को आमिर और साजिदा घर से भाग गए। बुधवार को साजिदा के चाचा आस मोहम्मद ने रतनपुरी थाने में आमिर और उसके चचेरे भाई के खिलाफ अपहरण की रिपोर्ट दर्ज करा दी।

वहीं, बुधवार शाम को आमिर और साजिदा सरधना रोड स्थित जेपी होटल पहुंचे। दोनों ने यहां आधार कार्ड की कापी दिखाकर कमरा ले लिया। दोनों के होटल में होने की जानकारी पर शाम सवा पांच बजे रतनपुरी पुलिस होटल पहुंची और कर्मचारियों से कमरा खुलवाने को कहा।

कर्मचारियों ने धक्का दिया तो कमरे का दरवाजा खुल गया। अंदर कमरे के बाथरूम में दोनों के शव कुंदे पर दुपट्टे से लटके हुए थे। सूचना पर कंकरखेड़ा पुलिस होटल पहुंची। दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी भिजवाया। बताया गया कि युवती के परिजन भी मेरठ पहुंच गए। सीओ दौराला अभिषेक पटेल ने बताया कि मुजफ्फरनगर पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

प्रेम यादव के घर से कुछ ही दूरी पर खड़ा है बुलडोजर

देवरिया। फतेहपुर गांव में दुबे परिवार के पांच सदस्यों की हत्या के आरोपियों के मकानों पर बुलडोजर चलाने की कार्रवाई बुधवार को नहीं हो सकी। हालांकि, कार्रवाई की तैयारी पुलिस-प्रशासन ने मंगलवार की रात में ही कर ली थी। सुबह एक बुलडोजर प्रेम यादव के मकान से कुछ दूर गांव के बाहर खड़ा कर दिया गया, लेकिन चला नहीं। कार्रवाई के लिए पूरे दिन आला अधिकारियों के आदेश का इंतजार होता रहा। आदेश नहीं मिलने के कारण बुलडोजर के पहिए थमे रहे। हालांकि, हत्याकांड के आरोपी फरार हैं, लेकिन गांव के बाहर बुलडोजर देखकर उनके घरवाले परेशान रहे। प्रेम यादव की बेटियों और पत्नी ने साफ कहा कि मकान गिराने से पहले बुलडोजर को उनके ऊपर से गुजरना होगा। वहीं, घटना के तीसरे दिन भी गांव में माहौल सामान्य नहीं हो पाया। पूरा गांव पुलिस के पहरे में है। पुलिस और प्रशासनिक अफसरों ने मौके पर पहुंचकर स्थिति का जायजा लिया। गांव के लोग वारदात और कार्रवाई के संबंध में तरह-तरह की चर्चा करते नजर आए।

जानकारी के मुताबिक, फतेहपुर गांव के लेहड़ा टोला निवासी सत्यप्रकाश दुबे और उनके परिवार के लोगों की हत्या के आरोपी पूर्व जिला पंचायत सदस्य प्रेम यादव व अन्य १० के घरों की जमीन की पैमाइश राजस्व टीम ने मंगलवार को की थी। डीएम के निर्देश पर राजस्व की टीम ने पूरे दिन गांव की सरकारी जमीनों, खलिहानों, ग्राम समाज की जमीन, बगीचे, नवीन परती, स्कूल की भूमि, खाद के गड्ढ़ों का ब्योरा तैयार किया। इसकी रिपोर्ट देर शाम सीआरओ को सौंप दी गई थी।

विभागीय सूत्रों के अनुसार, राजस्व विभाग की छानबीन में प्रेम यादव का मकान खलिहान की भूमि पर बना पाया गया है। इसकी रिपोर्ट मंगलवार की रात राजस्व विभाग की टीम ने प्रशासनिक अधिकारियों को सौंप दी थी। इसके बाद रात में ही निर्णय हो गया कि बुधवार की सुबह आठ बजे लेहड़ा टोले की सरकारी जमीनों पर बने मकानों को ध्वस्त कर दिया जाएगा। रात में ही कुछ लेखपालों को बुलडोजर की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी दे दी गई। इसके बाद जिला मुख्यालय, रुद्रपुर तहसील व बरहज क्षेत्र के कई जेसीबी मालिकों के पास फोन किया गया। रात में ही चार बुलडोजर की व्यवस्था की गई।

बुधवार की सुबह एक बुलडोजर गांव के बाहर खड़ा कर दिया गया। इस जगह से अवैध बताया जा रहा प्रेम यादव का मकान कुछ दूरी पर है। इसके बाद इलाके में हड़कंप मच गया। धीरे-धीरे पुलिस और पीएसी के अतिरिक्त जवान भी गांव पहुंच गए। इसी बीच फोन आया कि कार्रवाई दो घंटे बाद १० बजे से शुरू की जाएगी। दोपहर करीब १२ बजे गांव में तैनात कर्मचारियों ने राजस्व विभाग से संपर्क किया तो पता चला कि आला अफसर कागजी प्रक्रिया पूरी कर रहे हैं। आदेश के इंतजार में धीरे-धीरे पूरा दिन बीत गया।

विभाग के जानकारों का कहना है कि जिला स्तर पर सभी तैयारियां पूरी की जा चुकी हैं। सरकारी जमीन पर हुए अवैध निर्माण की सूची तैयार है। इसकी रिपोर्ट शासन को भेजी गई है। देर शाम तक कार्रवाई का आदेश न मिलने के कारण बुलडोजर नहीं चला। मुख्य राजस्व अधिकारी रजनीश राय ने बताया कि सरकारी जमीनों की पैमाइश की गई है। इसकी रिपोर्ट भेजी गई है। आगे की कार्रवाई निर्देश मिलने पर की जाएगी।

प्रेम यादव के मकान में बंद रहा ताला

प्रेम यादव के मकान के बाहर के हाते में ताला बंद रहा। बाहर दिनभर पुलिसकर्मी तैनात रहे। घर के अंदर पत्नी शीला, छोटे भाई रामजी यादव की पत्नी किरण को भय सता रहा था कि उनके मकान पर चंद पलों में कार्रवाई होने वाली है। प्रेम यादव की पत्नी अपनी बेटी अर्चना, अलका और अंशिका, बेटे तेजप्रताप के साथ बैठी हुईं थीं। अगर कोई दरवाजे पर आवाज दे रहा था तो भी बाहर नहीं निकल रहे थे।

देवरिया जिले में फतेहपुर गांव में सत्यप्रकाश दुबे और उनके परिवार के चार लोगों की हत्या के मामले में पुलिस ने बुधवार को चार और आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया। मामले में पुलिस नामजद कुल २७ लोगों में से २० को गिरफ्तार कर चुकी है। सात नामजद और ५० अज्ञात की गिरफ्तारी के लिए दबिश दी जा रही है। एक ही परिवार के पांच लोगों की हत्या के मामले में मृतक सत्यप्रकाश दुबे की बेटी शोभिता की तहरीर पर पुलिस ने दूसरे पक्ष के २७ नामजद और ५० अज्ञात के विरुद्ध केस दर्ज किया है। इनमें से मंगलवार को १६ लोगों की गिरफ्तारी हुई थी। वहीं, अज्ञात लोगों को चिह्नित करना पुलिस के लिए चुनौती बन गई है। सीओ जिलाजीत ने बताया कि घटना में आरोपी रामायन पाल, रघुवीर पाल, सुदामा पाल और सुग्रीव पाल को बुधवार को गिरफ्तार कर न्यायालय और वहां से न्यायिक अभिरक्षा में जेल भिजवा दिया गया। अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए टीमें लगाई गई हैं।

देवरिया जिले के फतेहपुर गांव के लेहड़ा टोला में हुए सामूहिक हत्याकांड में एक नई बात सामने आई है। गांव के एक आदमी की बातों पर यकीन करें तो प्रेम यादव वारदात वाले दिन सत्यप्रकाश दूबे के घर सुलह करने के इरादे से गया था, लेकिन जान गंवा दी। इस बात की जानकारी पुलिस को भी है। पुलिस इस एंगल से भी मामले की जांच कर रही है। गांव के एक व्यक्ति ने अपना नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया कि घटना वाले दिन वह सत्यप्रकाश दूबे के घर के पास से गुजर रहा था। उस समय दोनों के बीच बहस होती देख कुछ देर के लिए रुक गया था। इस आदमी का कहना है कि प्रेम ने बाइक खड़ी करके कहा था कि पंडित जी (सत्यप्रकाश) मुकदमा लड़ने से कोई फायदा नहीं है।

यह कई पीढ़ी तक चलेगा। आपको रुपये की जरूरत है। हम रुपये दे देंगे, आप कर्ज चुका दीजिए। सुलह कर लीजिए। इतना सुनते ही सत्यप्रकाश ने प्रेम को झापड़ मार दिया। इसी बीच किसी ने प्रेम के सिर पर भारी वस्तु से वार कर दिया। प्रेम जमीन पर गिर गया और उसकी मौत हो गई। बता दें कि प्रेमचंद यादव की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में भी मौत की पुष्टि सिर में चोट लगने से हुई बताई गई है। इस आदमी ने बताया कि सत्यप्रकाश ने लोन पर ट्रैक्टर लिया था, जिसकी तहसील से आरसी कट चुकी थी। कुछ दिन पहले पंचायत भवन पर इस संबंध में नोटिस चस्पा किया गया था। इसकी जानकारी प्रेम यादव को हो गई थी। उसे लगा था कि लोन के पैसे वह दे देगा तो दूबे उससे सुलह कर लेंगे। शायद यही सोचकर वह उस दिन दूबे के यहां गया था। बता दें कि प्रेम की मौत की खबर जब गांव में फैली तो उसके बाद उसके पक्ष के लोग आक्रोशित हो गए और सत्यप्रकाश दूबे के घर पर हमला कर दिया।

हमले में सत्यप्रकाश दूबे, उनकी पत्नी, दो बेटी और एक बेटे को मार डाला गया। एक बेटे को मरा समझकर छोड़ दिया। उसका इलाज बीआरडी मेडिकल क लेज में चल रहा है। अगर कोई लोन नहीं जमा करेगा तो आरसी कटेगी ही। मामले की जानकारी जुटाई जा रही है। सत्यप्रकाश दूबे ने ट्रैक्टर के लिए कर्ज लिया था। - के कौंडिल्य, तहसीलदार रुद्रपुर

पहले सत्यप्रकाश दूबे के दरवाजे पर कहासुनी और मारपीट हुई थी। इसके बाद मामला बिगड़ गया और भीड़ जुट गई। इसी वजह से इतनी बड़ी घटना हो गई। मामले की जांच की जा रही है। - राजेश कुमार, अपर पुलिस अधीक्षक

खलिहान की भूमि पर बना है प्रेम का मकान

फतेहपुर गांव के लेहड़ा टोले में पांच लोगों की हत्या के आरोपी प्रेम यादव का मकान खलिहान की भूमि पर बना है। विभागीय सूत्रों के अनुसार, राजस्व विभाग की छानबीन में प्रेम यादव का मकान खलिहान की भूमि पर बना पाया गया है। इसकी रिपोर्ट मंगलवार की रात राजस्व विभाग की टीम ने प्रशासनिक अधिकारियों को सौंप दी थी। इसके बाद रात में ही निर्णय हो गया कि बुधवार की सुबह आठ बजे लेहड़ा टोले की सरकारी जमीनों पर बने मकानों को ध्वस्त कर दिया जाएगा। रात में ही कुछ लेखपालों को बुलडोजर की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी दे दी गई। इसके बाद जिला मुख्यालय, रुद्रपुर तहसील व बरहज क्षेत्र के कई जेसीबी मालिकों के पास फोन किया गया।

मेरा परिवार खत्म करने वाले दानव जब मिट्टी में मिलेंगे तभी मिलेगी ठंडक बेटा बोला– सजा दें योगीजी

देवरिया। सत्यप्रकाश दुबे परिवार के बेटे देवेश ने कहा कि आरोपियों सरकार आरोपियों को सख्त सजा दे। मेरा परिवार खत्म करने वाले दानव जब मिट्टी में मिलेंगे तभी मिलेगी ठंडक मिलेगी। हमारी जमीन छलकपट से हड़पी गई, सरकार उसे वापस दिलाए। देवरिया शहर के रामनाथ देवरिया स्थित एक आवास पर पुलिस की सुरक्षा में रखे गए सत्यप्रकाश दूबे का बड़ा बेटा देवेश अब भी सदमे में है। उसका कहना है जिन लोगों ने मेरे परिवार को खत्म कर दिया, सरकार उन्हें कठोर से कठोर सजा दे। मेरे परिवार को निर्ममतापूर्वक समाप्त किया गया। हमला करने आए प्रेम के घर-परिवार के लोगों ने दानव का रूप ले लिया था। ऐसे दानवों को जब सरकार मिट्टी में मिलाएगी, तभी कलेजे को ठंड पहुंचेगी..।

यह कहते हुए देवेश रोने लगा। बोला- ऐसी आफत किसी के सामने न आए। छल-कपट से हमारी जो जमीन हड़पी गई, वह वापस मिलनी चाहिए। वह जमीन मेरे बाप-दादा की है। इस पर सिर्फ हमारा हक है।

अब मुझे ही करनी है दोनों भाइयों की परवरिश, सरकारी नौकरी दे सरकार : शोभिता

उधर, देवेश की बड़ी बहन शोभिता, अनमोल को देखकर गोरखपुर से लौटीं तो काफी सदमे में थीं। उन्होंने कहा- जिन छोटे भाइयो व बहनों को हंसते-खेलते देख खुश होती थी, उनका साथ छूट गया। एक भाई मेडिकल क लेज गोरखपुर में भर्ती है।

हमारे दिल पर क्या गुजर रही है, वह ही जानती हैं। मेरे दो भाई बचे हैं, मैं खुद एलएलबी कर रही हूं। सरकारी नौकरी अगर सरकार दे दे तो भाइयों की परवरिश हो जाए। सभी अपराधियों को ऐसी सजा मिले जो नजीर बने, ताकि फिर से किसी का परिवार बर्बाद न हो। ऐसे लोगों को धरती पर रहने का कोई हक नहीं है।

राजनीतिक हलचल–इमरान मसूद की कांग्रेस में एंट्री से बदलेंगे चुनावी समीकरण

सहारनपुर। इमरान मसूद एक बार फिर से कांग्रेस ज्व इन करेंगे। सात अक्तूबर को वह दिल्ली में फिर पार्टी ज्वाइन करेंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस में पहले से ही आस्था थी। पश्चिमी यूपी की सियासत के कद्दावर नेता माने जाने वाले पूर्व विधायक इमरान मसूद ने आखिरकार अपने राजनीतिक पत्ते खोल दिए।

पूर्व विधायक ने स्पष्ट कर दिया कि वह सात अक्तूबर को दिल्ली में जाकर कांग्रेस ज्वाइन कर लेंगे। पूर्व विधायक का कहना है कि पहले से ही कांग्रेस में आस्था थी, अब दोबारा से अपने घर वापसी कर रहा हूं। लोकसभा चुनाव में टिकट के सवाल पर उन्होंने कहा कि पार्टी हाईकमान का जो भी आदेश होगा उसके हिसाब से काम किया जाएगा।

सहारनपुर लोकसभा सीट हो या फिर कैराना और बिजनौर आदेशों का पालन किया जाएगा। दरअसल, करीब डेढ़ माह पहले राहुल गांधी की तारीफ करने पर बसपा से निष्कासन के बाद अटकलों का दौर जारी था कि इमरान मसूद किस पार्टी में जाएंगे। कांग्रेस के अलावा रालोद और अन्य राजनीतिक दल भी इमरान के संपर्क में थे। यह भी संभावना लग रही थी कि इमरान रालोद का दामन थाम सकते थे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

कांग्रेस में एंट्री से बदलेगा चुनावी समीकरण, होगी कांटे की टक्कर

इमरान मसूद की कांग्रेस में एंट्री के बाद लोकसभा चुनाव का समीकरण भी बदल सकता है। इमरान मसूद की मुस्लिम समाज के वोटरों में काफी अच्छी पकड़ है। कांग्रेस पहले से ही इंडिया गठबंधन में शामिल है। यदि इमरान को लोकसभा चुनाव का टिकट मिलता है तो वह मुस्लिम वोटरों को साधने में कामयाब हो सकते हैं। इमरान मसूद पहले भी तीन बार सहारनपुर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ चुके हैं।

कांग्रेस, सपा, बसपा अब फिर कांग्रेस

इमरान मसूद १९८७ में राजनीति में आ गए थे। २००१ में पहला चुनाव नगर पालिका सहारनपुर में चेयरमैन के पद पर लड़ा था, लेकिन हार का सामना करना पड़ा था। इसके बाद २००६ में नगर पालिका के चेयरमैन बने। वह सहारनपुर जिले की मुजफ्फराबाद सीट (अब बेहट सीट) से साल २००७ में निर्दलीय विधायक रहे हैं। इमरान २०१३ में कांग्रेस में आ गए थे। विधानसभा चुनाव २०२२ से पहले जनवरी में उन्होंने कांग्रेस को छोड़ दिया था। इसके बाद उन्होंने सपा का दामन थाम लिया था। फिर सपा को अलविदा कहकर बसपा में एंट्री मार दी थी।

समर्थकों के साथ दिल्ली में करेंगे ज्वाइन

इमरान मसूद ने अपने समर्थकों में जोश भरने और दिल्ली कूच की रणनीति बनाने के लिए बुधवार को दौलतपुर पुल पर रैली होनी थी, लेकिन प्रशासन से अनुमति न मिलने पर उन्होंने उसे रद्द कर दिया। इसके बाद उन्होंने गंगोह में अपने आवास पर बैठक कर समर्थकों की बैठक को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि वह घर-घर जाएंगे और पश्चिमी उत्तर प्रदेश को अलग प्रदेश बनाने की मांग करेंगे। उन्होंने समर्थकों से अपील की कि वह सात अक्तूबर को रोहाना टोल पर भारी तादाद में इकट्ठे हों। जहां से दिल्ली कूच किया जाएगा।

नीतीश कुमार सरकार को तीन यादव

बिहार की सबसे ज्यादा आबादी वाली जातियां

जाति	संख्या	प्रतिशत (%)
यादव	1,86,50,119	14.26%
दुसाध, धारी, धरही	69,43,000	5.31%
चर्मरकार	68,69,664	5.25%

पटना। बिहार की जातीय जनगणना का आंकड़ा जारी होने के बाद कांग्रेस के नंबर वन नेता राहुल गांधी और राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू यादव ने साफ कहा- जिसकी जितनी आबादी, उतनी भागीदारी। नीतीश सरकार मंत्रिमंडल में यह फ मूला लाए तो क्या हो? गांधी जयंती पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का एक बड़ा ड्रीम प्रोजेक्ट पूरा हुआ। जातीय जनगणना का रिक र्ड जारी किया गया।

इसके जारी होने के तत्काल बाद कांग्रेस के नंबर वन नेता राहुल गांधी ने आवाज लगाई- ष्जिसकी जितनी आबादी, उसकी उतनी भागीदारी।ष राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव ने भी यही आवाज दी। बाकी जगहों पर यह कब होगा, लेकिन बहुप्रतीक्षित मंत्रिमंडल विस्तार में नीतीश सरकार इसे लागू कर दे तो प्रयोग भी हो जाएगा। प्रतिभा या अनुभव की जगह नीतीश सरकार अगर जाति के हिसाब से मंत्रिमंडल को पटरी पर लाना चाहे तो उसे बड़ा उलटफेर करना होगा। मंत्रिमंडल का पुनर्गठन करना होगा। इसमें राजद की आधार जाति को ही सबसे बड़ा झटका लगेगा। कैसे, समझिए।

पहले जानिए, विधानसभा में मंत्रीपद का गणित

बिहार विधानसभा में २४३ सीटें हैं। इनमें १५ प्रतिशत अधिकतम मंत्री हो सकते हैं। मतलब, ३६ मंत्री बन सकते हैं। अभी ३१ मंत्री हैं। कांग्रेस अपने १६ विधायकों के लिए चार मंत्रीपद मांग रही है। उसके दो मंत्री हैं। २३ जून को विपक्षी एकता की बैठक के पहले उसे आश्वासन मिला था कि इस तारीख के बाद विस्तार करेंगे, लेकिन आजतक हुआ नहीं। राजद के दो मंत्री हटे या हटाए जा चुके हैं। मतलब, चार मंत्रीपद तो यही हो गए। बचा एक तो वह राजद-जदयू खुद में फैसला कर सकती है। बस, देखना होगा कि जिस जाति के मंत्री की हिस्सेदारी बनती है- उसके विधायक पार्टी में हों।

मुसलमानों को एक मंत्रीपद और मिलना चाहिए

बिहार की जातीय जनगणना और सत्तारूढ़ दल के विधायकों के धर्म को देखें तो सिर्फ हिंदू और मुसलमान में ही मंत्रीपद का बंटावारा संभव है। इस जनगणना ने दिखाया है कि बिहार में मुस्लिम धर्म के लोगों की आबादी १७.७ प्रतिशत हैं। उस हिसाब से ३६ में से छह मंत्रीपद इनके पास होना चाहिए। अभी पांच हैं। मतलब, एक मंत्रीपद तो इन्हें देना ही चाहिए। नीतीश कुमार मंत्रिमंडल में अगड़ा मुस्लिम का प्रतिनिधित्व मो. जमा खान और ड . शमीम अहमद कर रहे हैं। जमा खान बसपा से जीतकर जदयू में आए हैं। ड . शमीम अहमद राजद से हैं। अब मुसलमानों के पिछड़ा वर्ग की बात करें तो कांग्रेसी अफाक आलम मंत्री हैं, जबकि असद्दुदीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम छोड़कर राजद में आए शाहनवाज आलम भी मंत्री हैं। राजद के ही मो. इसराइल मंसूरी भी हैं।

लालू की बात मानें तो यादवों की ताकत घटेगी

बिहार की जातीय जनगणना में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जाति कुर्मी की आबाद २.८७ प्रतिशत है। अब ३६ मंत्रीपद का २.८७ प्रतिशत हिस्सेदारी निकालें तो एक ही मंत्रीपद इस जाति के पास होना चाहिए। मुख्यमंत्री पद पर कायम रहें तो मंत्री श्रवण कुमार को बाहर करना होगा। धानुक अलग जाति दिखाई गई है और इसकी आबाद २.१३ प्रतिशत है। आबादी के हिसाब से पूरे एक मंत्रीपद की हिस्सेदारी इसके पास नहीं है, हालांकि शीला कुमारी मंडल इस जाति से मंत्री हैं।

भूमिहार जाति को नफा-नुकसान नहीं है, क्योंकि आबादी के हिसाब से इस जाति का एक ही मंत्री होना चाहिए और विजय कुमार चौधरी हैं। सबसे बड़ा नुकसान राजद के आधार वोट को नजर आ रहा है। बिहार में १४.२६ प्रतिशत यादव बताए गए हैं और इस हिसाब से ३६ में से पांच मंत्री इस जाति की हिस्सेदारी है, जबकि आठ मंत्री हैं- उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, बिजेंद्र प्रसाद यादव, तेज प्रताप यादव, सुरेंद्र प्रसाद यादव, ड . रामानंद यादव, ललित कुमार यादव, ड . चंद्रशेखर यादव और जितेंद्र कुमार राय। आबादी के हिसाब से हिस्सेदारी में तीन यादव मंत्रियों को हटाना होगा।

नीतीश कुमार के लव-कुश समीकरण में कुश, यानी कोइरी मंत्रियों की संख्या दो है, जबकि आबादी के हिसाब से डेढ़ मंत्री की हिस्सेदारी है। आलोक मेहता और जयंत राज में से दोनों को कायम भी रखा जा सकता है।

दुसाध को लाना पड़ेगा, चमार-पासी को हटाना होगा

सरकार ने खुद जाति बताई है और आबादी के हिसाब से हिस्सेदारी की बात हो रही है। ऐसे में उसी का हिसाब देखें तो महज ०.६८ आबादी वाली पासी जाति के इकलौते मंत्री ड . अशोक चौधरी को कुर्सी छोड़नी पड़ेगी। क्योंकि, गणित के हिसाब से ०.३५ मंत्रीपद की हिस्सेदारी बन रही है।

नीतीश मंत्रिमंडल में दो राजपूत मंत्री हैं- लेशी सिंह और सुमित कुमार सिंह। आबादी के हिसाब से सवा मंत्री बन सकते हैं, मतलब एक ही रखना चाहिए। मल्लाह की आबादी २.६ फीसदी है तो इसे ०.६३ मंत्रीपद, यानी अधिकतम एक दिया जा सकता है। मदन सहनी इस हिस्सेदारी के साथ मंत्रिमंडल में हैं। मुसहर की आबादी भी ३. ०८ प्रतिशत है और इसे एक मंत्रीपद की हिस्सेदारी मिलनी चाहिए। जदयू ने रत्नेश सदा को यह दे रखी है। ब्राह्मण की आबादी ३.६५ फीसदी है और उसकी हिस्सेदारी के मंत्रीपद पर संजय झा विराजमान हैं। बनिया की आबादी २. ३१ है और इसे भी अधिकतम एक मंत्रीपद मिलना चाहिए। समीर कुमार महासेठ बने हुए हैं। दुसाध की आबादी ५.२१ प्रतिशत है, यानी मंत्रीपद पर उसकी हिस्सेदारी १.८७ फीसदी है। कुमार सर्वजीत के अलावा एक और मंत्री बनाए जा सकते हैं। नोनिया की आबादी १.६१ है और हिस्सेदारी तो ०.६८ मंत्रीपद की है। ऐसे में इसे एक मंत्रीपद दिया जा सकता है और अनीता देवी हिस्सा ले चुकी हैं। नुकसान उठाने वाली जातियों में चमार है, जिसकी आबादी ५.२५ है। आबादी के हिसाब से उसकी हिस्सेदारी १.८६ पद की बनती है। मतलब, दो मंत्री बनाए जा सकते हैं। इस जाति से सुनील कुमार, सुरेंद्र राम और मुरारी प्रसाद गौतम हैं। इनमें से किसी एक को हटाना पड़ेगा।

लालू-राहुल के फार्मूले से 10 सीटें खाली होंगी तो...

जिसकी जितनी आबादी, उतनी ही हिस्सेदारी- राहुल गांधी और लालू प्रसाद यादव के इस फार्मूले के बाद छह मंत्रीपद मुसलमान और ३० मंत्रीपद हिंदू में बंटेंगे। अभी हिंदु की विभिन्न जातियों से जो मंत्री हैं या जो खाली पद है, उस हिसाब से १० मंत्रियों के पद अंतिम तौर पर खाली दिख रहे हैं।

इसमें एक सीट तो निश्चित तौर पर दुसाध जाति को मिलनी चाहिए। शेष नौ में एक प्रतिशत से ज्यादा आबादी वाली जातियों को मौका दिया जाना चाहिए, जैसे- तेली (२.८१: आबादी), कानू (२.२१: आबादी), पान (१.७: आबादी), चंद्रवंशी (१.६४: आबादी), नाई (१.५६: आबादी), कुम्हार (१.४: आबादी), बढ़ई (१.४: आबादी) आदि को। इसके बाद भी एक-दो सीट बचे तो एक फीसदी से कम आबादी वालों की ओर नजर डालना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी एक प्रतिशत नहीं बल्कि एक सीट से भी सरकार रह या गिर जाती है।

उत्तर भारत में भूकंप के जोरदार झटके

घरों और आफिसों से बाहर निकले लोग, 6.2 रही तीव्रता

दिल्ली एनसीआर सहित आसपास के इलाकों में अभी भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए हैं। जोर के झटके लगते देख लोग अपने घरों और आफिसों से बाहर निकल आए। इसकी तीव्रता रिक्टर स्केल पर 6.2 बताई जा रही है। भूकंप का झटके दोपहर दो बजकर 53 मिनट पर महसूस किए गए। हालांकि अभी तक किसी भी तरह का अप्रिय समाचार सामने नहीं आया है।

नई दिल्ली। दिल्ली एनसीआर सहित पूरे उत्तर भारत में भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए हैं। जोर के झटके लगते देख लोग अपने घरों और आफिसों से बाहर निकल आए।इसकी तीव्रता रिक्टर स्केल पर ६.२ बताई जा रही है। भूकंप के झटके दोपहर दो बजकर ५३ मिनट पर महसूस किए गए। हालांकि, अभी तक किसी भी तरह का अप्रिय समाचार सामने नहीं आया है। ऐसा बताया जा रहा है कि इस भूकंप का केंद्र नेपाल में था।

यह झटके दिल्ली, नोएडा, फरीदाबाद, गुरुग्राम, गाजियाबाद सहित आसपास के शहरों में महसूस किए हैं। इसके साथ ही उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान में भी लोगों को भूकंप के झटके लगे हैं।

रिक्टर स्केल क्या होता है ?

अमेरिकी भू-विज्ञानी चार्ल् स एफ रिक्टर ने सन १६३५ में एक ऐसे उपकरण का इजाद किया, जो पृथ्वी की सतह पर उठने वाली भूकंपीय तरंगों के वेग को माप सकता था। इस उपकरण के जरिए भूकंपीय तरंगों को आंकड़ों में परिवर्तित किया जा सकता है। रिक टर स्केल आमतौर पर लागरिथम के अनुसार कार्य करता है। इसके अनुसार एक संपूर्ण अंक अपने मूल अर्थ के १० गुना अर्थ में व्यक्त होता है। रिक टर स केल में १० अधिकतम वेग को दर्शाता है।

ट्रोल

बढ़े वजन के लिए ऐश्वर्या हुईं

लोगों ने उनके वजन पर किए कमेंट्स, रैंप पर अमेरिकन सुपर माडल के साथ थिरकीं

दिल्लीं। ऐश्वर्या राय बच्चन तकरीबन १२ सालों से लारियल की ब्रैंड एम्बेसडर रही हैं। हर साल वे ब्रैंड कि तरफ से फैशन वीक का हिस्सा बनती हैं। हाल ही में ऐश्वर्या को पेरिस फैशन वीक में रैंप वाक करते देखा गया। गोल्डन कलर के डेज्जलिंग गाउन में वे किसी दीवा से कम नहीं लग रही थीं। वे मुस्कुराते हुए रैंप पर आईं और अपना पसंदीदा फ्लाइंग किस पोज दिया। अमेरिकन सुपर माडल और रियलिटी स्टार केंडल जेनर के साथ वे स्टेज पर थिरकती नजर आईं। हालांकि सोशल मीडिया पर उन्हें बढ़े हुए वजन की वजह से ट्रोल भी किया गया।

केंडल जेनर के साथ थिरकीं

ऐश्वर्या राय बच्चन अमेरिका की सुपर माडल और रियलिटी स्टार केंडल जेनर के साथ स्टेज पर थिरकती नजर आईं। दोनों एक दूसरे से बातचीत करती भी दिखीं। केंडल जेनर ने व्हाइट कलर का शाइनिंग गाउन पहना हुआ था।

वजन को लेकर लोगों ने किए कमेंट्स

ऐश्वर्या राय बच्चन का पेरिस फैशन वीक लुक काफी सुर्खियों में बना हुआ है। हालांकि उनकी ड्रेस और लुक्स के लिए लोग काफी तारीफ कर रहे हैं, लेकिन कुछ यूजर ने वजन को लेकर उन्हें बुरी तरह ट्रोल भी कर दिया है। एक यूजर ने लिखा- ये अपना टमी क्यों कवर कर रही हैं? वहीं दूसरे यूजर ने लिखा- इनका वजन बढ़ गया है।

बांद्रा के एक रेस्टोरेंट के बाहर दिखे सेलेब्स

दिल्ली। रश्मिका मंदाना को देर रात बांद्रा के एक रेस्टोरेंट लास कैवास से बाहर निकलते हुए देखा गया। वे फुल ब्लैक आउटफिट में काफी रिलैक्सड और खुश नजर आ रही थीं। उन्होंने ब्लैक टाप एंड पैंट के साथ ब्लैक जैकेट भी पहनी हुई थी। रश्मिका ने पैप से बातचीत की। उन्होंने मीडिया को अपना पसंदीदा सिग्नेचर पोज दिया। अपने फैंस के साथ भी रश्मिका ने फोटोज क्लिक कारवाई। बता दें, रश्मिका, रणबीर कपूर के साथ फिल्म एनिमल में नजर आएंगी। ये फिल्म एक दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

वरुण धवन और नताशा दलाल को भी बांद्रा रेस्टोरेंट में देखा गया। वरुण ने ब्लू जींस के साथ स्ट्राइप्ड प्रिंटेड शर्ट पहनी थी। नताशा ने एक बेहद स्टाइलिश डेनिम ड्रेस पहनी हुई थी। दोनों ने हाथ पकड़कर पैप को पोज भी दिया। वरुण धवन २०२१ में अपनी लान्ग टाइम गर्लफ्रेंड नताशा दलाल से शादी के बंधन में बंधे थे।

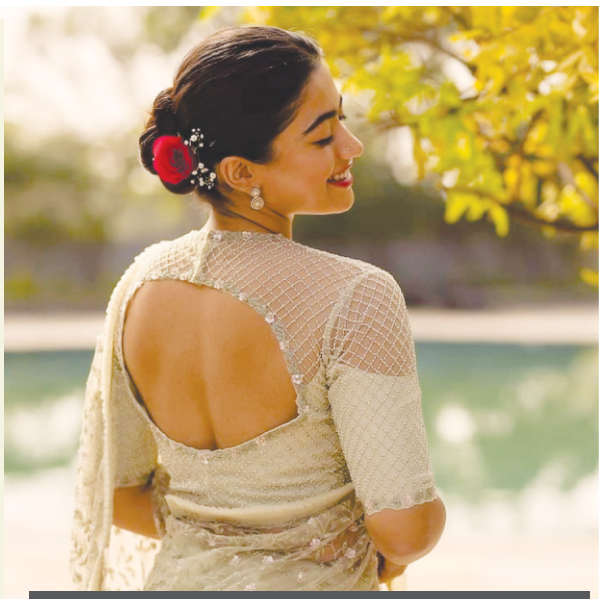

रश्मिका मंदाना ने अपना सिग्नेचर पोज दिया, वरुण धवन वाइफ नताशा के साथ नजर आए

पहली नजर में ही पहलाज को भा गई थीं दिव्या भारती

एंटरटेनमेंट डेस्क। बालीवुड अभिनेत्री दिव्या भारती ने कम ही दिनों में इंडस्ट्री में वह मुकाम हासिल किया, जो आज की कई अभिनेत्रियों के लिए सपना है।फिल्म जगत में दिव्या की एंट्री क्या हुई, उन्होंने तो धमाल ही मचा दिया। महज दो साल के करियर में १२ फिल्में कर डालीं। बालीवुड अभिनेत्री दिव्या भारती ने कम ही दिनों में इंडस्ट्री में वह मुकाम हासिल किया, जो आज की कई अभिनेत्रियों के लिए सपना है।फिल्म जगत में दिव्या की एंट्री क्या हुई, उन्होंने तो धमाल ही मचा दिया। महज दो साल के करियर में १२ फिल्में कर डालीं। उस दौर की हर हीरोइन को उन्होंने लगभग साइडलाइन कर दिया, लेकिन यह सितारा जितनी तेजी से चमका, उतनी तेजी से अस्त भी हो गया। अब केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष पहलाज निहलानी ने दिवंगत अभिनेत्री को याद कर उनसे जुड़े कुछ दिलचस्प किस्से साझा किए हैं। हाल ही में, फिल्म निर्माता और केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष पहलाज निहलानी ने दिवंगत अभिनेत्री दिव्या भारती को फिल्म इंडस्ट्री में लान्च करने के बारे में बात की और एक कहानी सुनाई कि कैसे वह नखरे करती थीं क्योंकि वह १९९३ की फिल्म आंखें में चंकी पांडे के साथ कास्ट नहीं होना चाहती थीं।

पहलाज निहलानी ने आंखें की यादों को किया ताजा

एक इंटरव्यू में पहलाज ने बताया कि जब उनकी नजर पहली बार दिव्या भारती पर पड़ी, तो उन्हें लगा कि वह अच्छी स्थिति में नहीं हैं। पहलाज ने उन्हें वजन कम करने की सलाह दी। आगे दिव्या को डेविड धवन निर्देशित और गोविंदा अभिनीत फिल्म शोला और शबनम में कास्ट किया गया था । पहलाज ने कहा, श्हमने तब तक फिल्म की शूटिंग शुरू नहीं की थी और दिव्या ने एक सचिव के माध्यम से मुझसे संपर्क किया। मैंने उनकी तस्वीरें देखीं और महसूस किया कि वह थोड़ी मोटी लग रही थी। मैंने सचिव से कहा कि काम शुरू करने से पहले उन्हें अपना वजन कम करना होगा।

चंकी के अपोजिट काम नहीं करना चाहती थीं दिव्या भारती

आगे पहलाज से यह पूछा गया कि क्या दिव्या भारती भी उनके साथ आंखें करने वाली थीं। निर्माता ने याद करते हुए कहा, श्शां, दिव्या, पूजा भट्ट और जूही चावला यह फिल्म करने वाली थीं। मैंने फैसला किया कि दिव्या को चंकी के साथ और रितु शिवपुरी को गोविंदा के साथ कास्ट किया जाना चाहिए। जब डेविड ने उन्हें फिल्म की कास्टिंग के बारे में बताया तो वह परेशान हो गईं। उसने मुझे फोन किया और खूब गुस्सा दिखाया और मुझे बुलाया। मैं उनसे मिलने गया और उन्होंने कहा, श्मैंने सुना है कि मैं चंकी के सामने हूं? मैंने हां कह दिया। उन्होंने फिल्म करने से इनकार कर दिया।

आटो की सवारी करती दिखीं श्रद्धा कपूर

दिल्ली। श्रद्धा कपूर को सुबह आटो की सवारी करते हुए देखा गया। एक ब्रैंड शूट के लिए वे आटो से वर्सोवा जेट्टी आईं। जेट्टी मतलब जहां से पानी वाला जहाज निकलता है। बिना मेकअप के भी श्रद्धा बेहद खूबसूरत दिखाई दे रही थीं। उन्होंने मास्क लगाया हुआ था। पैप के कहने पर श्रद्धा ने मास्क उतारा और फिर पोज दिया।

लाइट ग्रीन टी-शर्ट और ब्लू जींस में श्रद्धा बेहद प्यारी दिख रही थीं। बता दें, श्रद्धा कपूर एक ऐसी सेलिब्रिटी हैं जिनको अक्सर आटो की सवारी करते हुए देखा जाता है। हाल ही में उन्हें रणबीर कपूर के साथ फिल्म तू झूटी मैं मक्कार में देखा गया था। इस फिल्म ने बाक्स आफिस पर जबरदस्त कमाई की थी।

बेटे के साथ स्पाट हुए सनी दओल

फैंस के साथ फोटो खिचवाते नजर आए राजवीर देओल, फिल्म दोनों से करेंगे बालीवुड डेब्यू

दिल्ली। सनी देओल और उनके बेटे राजवीर देओल को मुंबई के प्रीतम दा ढ़ाबा में स्पाट किया गया। इस दौरान दोनों बाप-बेटे फैंस के साथ फोटो खिंचवाते हुए नजर आए। सनी देओल की फिल्म गदर २ ने बाक्स आफिस पर धमाल मचा दिया था। अब उनके बेटे राजवीर देओल राजश्री प्रोडक्शन की फिल्म 'दोनों' से अपना बालीवुड डेब्यू कर रहे हैं। फिल्म से उनके साथ पूनम ढिल्लों की बेटी पलोमा ढिल्लों भी अपना डेब्यू कर रही हैं। फिल्म ५ अक्टूबर को थिएटर में रिलीज होगी।

यशस्वी जायसवाल

भदोही के लाल ने एशियन गेम्स के पहले ही मैच में शतक जड़ रचा इतिहास

भदोही। यशस्वी जायसवाल मूल रूप से भदोही जिले के सुरियांवा निवासी हैं। नेपाल के खिलाफ तूफानी बल्लेबाजी को देख जायसवाल के परिजनों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। तो वहीं पूरे गांव में लोग हर्षित नजर आए। यूपी के भदोही जिले के लाल यशस्वी जायसवाल ने एशियन गेम्स के पहले ही मैच में नेपाल के खिलाफ तूफानी शतक जड़कर इतिहास रचा। पहली बार एशियन गेम्स में शामिल के क्रिकेट के पहले भारतीय शतकवीर बनने का गौरव हासिल किया। इसके साथ ही वह टी-२० इंटरनेशनल में भारत के लिए शतक जड़ने वाले सबसे युवा बल्लेबाज बन गए हैं। यशस्वी से पहले यह रिक र्ड शुभमन गिल के नाम था। यशस्वी मूल रूप से भदोही जिले के सुरियांवा निवासी हैं। तूफानी बल्लेबाजी को देख जायसवाल के परिजनों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। तो वहीं पूरे गांव में लोग हर्षित नजर आए।

घर में बड़ी मां मनोरम, लक्ष्मीकांत, माया देवी, रीता देवी के साथ भाई ड . विकास जायसवाल, विशाल, शिवम व अन्य लोगों ने एक-दूसरे का मुंह मीठा कराकर बधाई दी। यशस्वी के पिता भूपेंद्र जायसवाल उर्फ गुड्डन ने बताया कि यहां तक का सफर तय करने में उनके पुत्र को काफी स्ट्रगल करना पड़ा। आज उसकी सफलता ने पूरे परिवार को गदगद कर दिया।

भारत ने नेपाल को दी करारी शिकस्त

मंगलवार सुबह ही परिवार के लोग टेलीविजन के सामने बैठे मैच देख रहे थे। जैसे-जैसे उनकी पारी आगे बढ़ती रही पूरा परिवार खुशी से झूमता चला गया। ट स जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी टीम इंडिया ने निर्धारित २० ओवर में चार विकेट के नुकसान पर २०२ रन बनाए। यशस्वी जायसवाल के शतक के अलावा कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ और शिवम दुबे ने २५-२५ रनों की पारी खेली। वहीं रिंकू सिंह ने १५ गेंदों पर ताबड़तोड़ ३७ रनों की नाबाद पारी खेली। इसके जवाब में नेपाल की टीम नौ विकेट खोकर १७६ रन ही बना सकी।

यशस्वी की ये पारी इस कारण बेहद खास

एशियन गेम्स के पहले मैच में नेपाल के खिलाफ यशस्वी जायसवाल ने ४६ गेंदों में १०० रन की पारी खेली। उन्होंने ८ चौकों और सात गगनचुंबी छक्के लगाए। यशस्वी की ये पारी इसलिए खास है क्योंकि जिस विकेट पर उन्होंने शतक जड़ा, वो बल्लेबाजी के लिए आसान नहीं था। दूसरे छोर से विकेट गिर रहे थे लेकिन एक छोर पर यशस्वी न सिर्फ डटे रहे बल्कि ताबड़तोड़ बैटिंग जारी रखी। इसी का नतीजा रहा कि उन्होंने ४८ गेंद में ही शतक पूरा कर लिया। इसके साथ ही यशस्वी जायसवाल ने एक बार फिर साबित कर दिया कि क्यों उन्हें भारतीय क्रिकेट का नया सितारा माना जा रहा है। टेस्ट क्रिकेट में धमाकेदार डेब्यू के बाद से ही यशस्वी जायसवाल टी-२० इंटरनेशनल में भी अपने बल्ले से कोहराम मचा रहे हैं।

यशस्वी ने बचपन में मुफलिसी में गुजारे दिन अपनी हस्तनिर्मित खूबसूरत कालीन के लिए दुनियाभर में मशहूर भदोही की लोकप्रियता में उसके अपनी मेहनत और शानदार क्रिकेट से यशस्वी जायसवाल लगातार इजाफा कर रहे हैं। सुरियावां नगर के छोटे व्यवसायी भूपेंद्र जायसवाल और मां कंचन के परिवार में जन्म लेने वाले दो पुत्रों में शामिल यशस्वी बचपन से क्रिकेटर बनना चाहते थे। क्रिकेट का जुनून इस कदर हावी था कि मात्र ११ साल की उम्र में ही जायसवाल मुंबई चले गए थे। वहां उन्होंने मुफलिसी में दिन गुजारे लेकिन अपने इरादे से डगमग नहीं हुए। वर्ष २०१२ में उन्होंने मुंबई आजाद मैदान में मुस्लिम यूनाइटेड क्लब की शतक मारने की शर्त जीतकर उन्होंने क्रिकेट की पहली सीढ़ी चढ़ी तो पीछे पलटकर नहीं देखा।

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः— 273003
Tital code: UPHIN51019
बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com
नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।